संजय की कलम से

मशीनी जीवन

वर्तमान युग को 'कलियुग' कहा जाता है परन्तु वास्तव में यह है – कल-युग अथवा कलह-युग। यह कलह-युग तो इस दृष्टिकोण से है कि जहाँ-तहाँ कलह और क्लेश ही फैला हुआ है। आज मनुष्य ऊँचा बोलता है, वावेला मचाता है और मशीनों और मोटरों की ध्वनि-तरंगों से भी वातावरण में कोलाहल है।

दूसरी ओर देखें तो वर्तमान युग कल-युग भी है। सो तो आप देखते ही हैं कि कितने प्रकार के कल-पुर्जे आये दिन बनते रहते हैं। कलयुग में कल का तो ऐसा स्थान हो गया है कि मनुष्य का खाना-पीना, रहना-सहना, आना-जाना, पढ़ना-लिखना, मेल-जोल सब कलों पर ही आधारित है। मशीनें बनाई तो मनुष्य ने हैं परन्तु आज स्थिति ऐसी आ गयी है कि मनुष्य मशीनों का दास-सा हो गया है, वह मशीनों के वशीभूत हो गया है।

मनुष्य का जो शरीर है, इसकी भी एक मशीन से तुलना की जाती है। हमारे शरीर में जो आँख, कान आदि-आदि हैं, ये शरीर रूपी मशीन के कल-पुर्जे हैं, ये देखने, सुनने आदि के यन्त्र हैं। अब ध्यान देने के योग्य बात यह है कि जैसे इस कलियुग का मनुष्य कल-मशीनों के वश हो गया है, वैसे ही वह शरीर के इन कल-पुर्जों रूपी इन्द्रियों का दास हो गया है। उसकी आँखें किसी वस्तु की सुन्दरता को देखती हैं तो वह उसके वश हुआ-सा अपने विवेक को मार कर भी, उस वस्तु के पीछे लग जाता है। इस प्रकार न केवल उसे आँखें ही धोखा देती हैं बल्कि दूसरी इन्द्रियाँ भी अपने-अपने विषयों की ओर खींचती हैं और वह बे-काबू हुआ अपनी सुध-बुध भूलकर उन्हें पाने में लग जाता है। और तो क्या, आज मनुष्य स्वयं को भी देह मानता है, गोया एक सोचने-समझने वाली मशीन ही मानता है। वह स्वयं को देह से भिन्न एक आत्मा निश्चय नहीं करता। तो आप ही बताइये कि आज जबकि मनुष्य का जीवन भी मशीन-जैसा (Mechanical) सैट (Set) हो गया है और मशीन की तरह वह प्रेम और दया से शून्य तथा आत्मा और परमात्मा के विचार से रहित हो गया है, मशीन की तरह ही कलह मचाता है और स्वयं को भी देह रूपी मशीन ही मानता है तो क्या वर्तमान युग को 'कल-युग' कहना सर्वथा उचित नहीं है?

आज सारे समाज का हर कल-पुर्जा रूपी मनुष्य बिगड़ा हुआ है। यह सब इस कारण से है कि मनुष्य स्वयं को देह-रूपी मशीन मान बैठा है। इसका सुधार तभी हो सकता है जब वह स्वयं को आत्मा निश्चय करे और परमपिता परमात्मा से बुद्धि का कनेक्शन जोड़कर शान्ति, दया, प्रेम आदि गुणों को अपने में भरे। ❖

❀ अमृत सूची ❀

- जीवन स्तर और विचारों का स्तर (सम्पादकीय) 4
- परम शक्ति (कविता) 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .7
- शिवशक्तियों की 9
- श्रद्धांजलि......................11
- ईश्वरीय कारोबार में 12
- श्रद्धांजलि 15
- सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गये .16
- 'पत्र' संपादक के नाम 18
- आध्यात्मिकता टीकाकरण ...19
- खुदा बन गए मेरे दोस्त 21
- रावण मर गया या............22
- अन्नामलाई वि.वि. पाठ्यक्रम ..24
- वृद्धावस्था अभिशाप नहीं.....25
- कर्मठ बनें, कर्महीन नहीं 27
- सचित्र सेवा समाचार 28
- मानव जीवन में...............30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- बर्बाद कर देती है 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

जीवन स्तर और विचारों का स्तर

मनुष्य जब जन्म लेता है तो अपने शरीर के कार्यों के लिए दूसरों पर आधारित होता है। जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, सीखता जाता है और सीखने के क्रम में निरंतर सुधार होने से उसके पहनने, खाने, सोने, रहने आदि के तरीके अधिक सलीकेदार बनते जाते हैं परन्तु कैसी विडम्बना है कि शरीर निर्वाह के सम्बन्ध में सुधरता जाता है पर सोच के स्तर पर बिगाड़ होता जाता है। बचपन की स्वच्छ सोच, चढ़ती उम्र के साथ बिगड़ती चली जाती है। बाह्य सुन्दरता की भेंट में आन्तरिक सौन्दर्य पिछड़ता जाता है।

उपेक्षित रहता है आन्तरिक सौन्दर्य

आन्तरिक सौन्दर्य पिछड़ने का एक कारण तो यह है कि माता-पिता भी जो सिखाते हैं, उसमें बाहरी सलीके, स्वच्छता, सौन्दर्य पर ध्यान ज्यादा होता है। खाने से पहले हाथ धोना, खाने के बाद हाथ धोना, मुख, चेहरा साफ रखना, बाल ठीक रखना, कपड़े ठीक से पहनना – इन सब बातों के लिए माता-पिता बार-बार टोकते हैं। यदि बच्चा खुद ना करे तो स्वयं (राजी से या जबरदस्ती से) करते हैं परन्तु आन्तरिक सौन्दर्य के प्रति उपेक्षित रहते हैं। एक बार सफर के दौरान माता-पिता और 3½ साल का उनका बच्चा मेरे साथ बैठे थे। बच्चा मोबाइल लेकर बटन दबाए जा रहा था, खाना ठीक से नहीं खा रहा था। माँ ने मोबाइल लेकर कहा, पहले खाना खा लो, फिर मोबाइल ले लेना। बच्चा रोने लगा, रोते-रोते पिता की तरफ देखा। पिता ने बच्चे को पुचकारा और कहा, मम्मी को मारो। बच्चे ने छोटे-छोटे हाथों से मम्मी को मारना शुरू कर दिया। मैं विचार करने लगा कि क्या बच्चे को चुप कराने का एकमात्र तरीका माँ को मारना ही है? हम उसे क्या ट्रेनिंग दे रहे हैं? मम्मी मार खाने के लिए है क्या? कई मामलों में मम्मियाँ भी कह देती हैं, पापा गन्दे हैं, पापा को मारो आदि-आदि। हम उसे मारने की ट्रेनिंग दे रहे हैं, वो भी अपने सम्माननीय को। सम्मान करने की ट्रेनिंग कब देंगे? और जब देंगे तब तो ये संस्कार पक चुके होंगे, तब इन्हें कैसे बदलेंगे? ये छोटी बातें बहुत गहरी हैं पर हम उनकी गहराई में उतरने का प्रयास नहीं करते। हम बच्चे को गन्दा नहीं देखना चाहते पर उसके मन और कर्मों को तो गन्दा कर रहे हैं। यदि बच्चा हमारी इस बात को सीखता है कि खाना खाकर हाथ-मुँह साफ करने चाहिएँ तो इस बात को क्यों नहीं सिखेगा कि मम्मी या पापा को एक-दूसरे के कहने पर मार देना चाहिए। जैसे बड़ा होकर हाथ, मुँह बिना कहे धोया करेगा, ऐसे ही बिना कहे मारने का काम भी करेगा। हम यह ना कहें कि बच्चा छोटा है, जानता थोड़े ही है। अभिमन्यू तो इससे भी छोटा था (गर्भ में था) जब चक्रव्यूह में प्रवेश करना जान गया था। यह भी ना कहें कि हम तो मजाक कर रहे थे, मजाक भी तो ऐसा हो जो उसके अच्छे संस्कार बनाए। एक अन्य बच्चा, जो पौने छः साल का था, कह रहा था, मम्मी को कुछ नहीं आता। बात बहुत छोटी है, पर है तो माँ का डिसरिगार्ड। माताएँ सावधान हो जाएँ, बच्चों को ऐसी बातें कहने के आदी न बनने दें। धीरे-धीरे ऐसी आदतें जड़ें पकड़ लेती हैं और ये जड़ें फैलती चली जाती हैं जिन्हें काटना भी मुश्किल हो जाता है और बाद में चुभने भी लगती हैं, भले ही छोटेपन में महसूस ना हों।

बाहरी अंकुश का अभाव

हमने यह सामान्य-सा उदाहरण लिया कि किस प्रकार हम बच्चों के आन्तरिक संस्कारों के सौन्दर्यकरण के प्रति लापरवाह रहते हैं। दूसरा कारण यह है कि समाज में रहते हम अपनी बहुत-सी आदतों को, लोग कुछ कह न दें, इस भय से बदल लेते हैं। जैसे कपड़ा, जूता, मकान आदि पुराने डिजाइन के या घटिया या फटे-पुराने, टूटे-फूटे हों तो हमें

संकोच होता है कि लोग टोकेंगे कि क्या तुम्हारे पास बढ़िया कपड़े नहीं हैं, ये क्यों पहने हैं? कोई कह देगा, अरे अच्छा-सा मकान बनाओ ना, कहाँ इस टपरिया में पड़े हो? परन्तु संकल्प पैदा करने के लिए हम स्वतन्त्र हैं। उनके लिए कोई नहीं कहेगा कि तुम यह क्रोध का या ईर्ष्या का या बदले का संकल्प क्यों कर रहे हो, क्या तुम्हारे पास कोई बढ़िया विचार नहीं है? विचार तो गुप्त रहते हैं, किसी को दिखते नहीं इसलिए हम जैसे मर्जी पैदा करें। बाहरी जीवन स्तर को सुधारते जाते हैं और निजी या बाहरी अंकुश के अभाव में विचारों को बिगाड़ते जाते हैं।

गलत विचार करते हैं जहरीले द्रव्यों का निर्माण

इस अज्ञानता और लापरवाही का परिणाम देखिए कितना भयंकर निकल रहा है। घटिया, गिरे हुए, पतित विचार पैदा कर-करके हम अन्दर से शक्तिहीन, डरपोक, हिंसक, अन्यायी, पक्षपाती, झूठे, अहंकारी, आलसी, धोखेबाज, दिखावाबाज और रोगी बनते जा रहे हैं। पहनने, खाने, रहने, आने-जाने आदि का स्तर मंगलमय है और विचार जंगलमय हैं। इस दोगली सभ्यता के चंगुल में फंसा मानव अकेलेपन का दंश भोग रहा है। दिल का प्यार दिखावे के नीचे दब गया है। ऐसे विचारों की निरन्तरता के कारण तनाव पैदा होता है और फिर तनावजनित रोग लगते हैं। उन रोगों का कारण हम दूसरों को मानते हैं। हम कह देते हैं, खान-पान, पर्यावरण, लोगों के व्यवहार आदि के कारण मैं बीमार रहता हूँ परन्तु सच्चाई यह है कि हमारे गलत विचार अन्दर ही अन्दर जहरीले द्रव्यों का निर्माण करते हैं जो शरीर को गलाते चले जाते हैं। ये नकारात्मक विचार ही अपराधों को जन्म देते हैं।

कैसे सुधारा जीवन स्तर ?

आज की ज्वलंत आवश्यकता यह है कि हम जीवनस्तर के साथ-साथ विचारों का स्तर भी सुधारें। इसके साथ-साथ ज्वलंत सवाल भी यही है कि विचार सुधारने का यह कार्य करें कैसे? आइये विचार करें, हमने

जीवनस्तर कैसे सुधारा? अपने पूर्वजों के श्रमशील जीवन की भेंट में सुविधासम्पन्न जीवन तक की यात्रा कैसे तय की? इसमें कइयों का योगदान रहा। किसी वैज्ञानिक ने सुविधा सम्पन्न जीवन के साधन ईजाद किए, किसी कम्पनी ने बाजार में उतारे, हमने धन कमाया और उन साधनों की पहुँच अपने घर तक बनाई।

चीजों की तरह विचारों की श्रेणी भी उत्तम हो

जिस प्रकार साइन्स ने सुविधाओं को जन्म दिया इसी प्रकार शुद्ध विचारों की जन्मदाता है साइलेन्स। साइलेन्स अर्थात् शान्ति की शक्ति जिसका स्रोत है परमपिता परमात्मा। अपने को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने से हम अपने विचारों को सुधार सकते हैं। इस विधि का नाम है राजयोग। राजयोग के अभ्यास में हम अन्तर्मुखी हो जाते हैं और हमारी अन्तर्दृष्टि स्पष्ट हो जाती है। बाहरी दृष्टि की स्पष्टता से हमने एक-दूसरे के जीवन-स्तर की नकल कर-करके उसे बेहतर बनाया। इसी प्रकार अन्तर्दृष्टि को विकसित करके हम अपने विचारों के स्तर को सुधार सकते हैं। बार-बार भीतर जाकर अपने विचारों को देखें, परखें और निर्णय करें कि मैं जो सोच रहा हूँ , क्या वह उत्तम क्वालिटी का है? यदि मेरे इन विचारों को कोई देख ले, जान ले तो मेरे बारे में क्या धारणा बनाएगा? अपने को समझाएँ कि जैसे भौतिक चीजों को खरीदते हुए

उनकी क्वालिटी की जाँच-परख करते हैं इसी प्रकार विचार भी तो उत्तम श्रेणी के रखने हैं।

सन्तुलन के लिए भौतिक और वैचारिक दोनों ऊँचाइयाँ जरूरी

राजयोग की शिक्षा के अनुसार सबसे उत्तम विचार है स्व का चिन्तन और परमात्मा का चिन्तन अर्थात् आत्म-चिन्तन। परचिन्तन पतनकारी है और आत्मचिन्तन उत्थानकारी है। आत्मा अति सूक्ष्म आध्यात्मिक शक्ति है जिसे शस्त्र काट नहीं सकता, जल गला नहीं सकता, वायु सुखा नहीं सकती और अग्नि जला नहीं सकती। आत्मा एक अति सूक्ष्म सितारे के समान है जो भ्रकुटि सिंहासन पर विराजमान हो शरीर रूपी साधन से कार्य करवाती है। आत्मा का मूल गुण है शान्ति। शान्ति के विचारों को बार-बार उत्पन्न करने व स्मरण करने से आन्तरिक शान्ति बढ़ती जाती है। जैसे भौतिक चीजों के लिए बार-बार संकल्प करते हैं, 'मुझे हवाई यात्रा करनी है, कुछ भी हो जाए', 'मुझे बढ़िया मकान बनाना ही है, कुछ भी हो जाए', 'मुझे ऊँची डिग्री लेनी ही है, कुछ भी हो जाए' आदि-आदि। इसी प्रकार अपने को बार-बार याद दिलाएँ, 'मुझे शान्ति में रहना ही है, कुछ भी हो जाए', 'मुझे सकारात्मक रहना ही है, कुछ भी हो जाए', 'मुझे अपने गुणों को सुरक्षित रखना ही है, कुछ भी हो जाए', 'मुझे परमात्मा पिता की स्मृति से मन को पावन करना ही है, कुछ भी हो जाए' आदि-आदि। कोई भी प्राप्ति मन के दृढ़ पुरुषार्थ से सम्भव होती है। यदि हम मन की दृढ़ता से भौतिक ऊँचाइयाँ छू सकते हैं तो आन्तरिक और आध्यात्मिक क्यों नहीं, वैचारिक ऊँचाइयाँ क्यों नहीं? आखिर दोनों ऊँचाइयाँ समान होंगी तभी तो जीवन सन्तुलित होगा, नहीं तो एक पहिए से गाड़ी कैसे चलेगी? या तो रुक-रुक कर चलेगी या खड़ी ही हो जाएगी। अत: जीवन स्तर के सुधार के साथ-साथ वैचारिक स्तर को भी चमकाइये, तभी जिन्दगी सही अर्थों में चमकेगी।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

परम शक्ति

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी.

कल्प-कल्प के संगम पर, अज्ञान घोर अंधियारों में ।
वो ज्ञान सूर्य प्रकट होता, दमके जीवन उजियारों में।।

सम्पूर्ण जगत की आत्मायें, नित-नित जिसको पुकार रहीं।
ईसा, मूसा, नानक ने भी जिसकी महिमा की बात कही।।
एक ज्योति निरन्तर जगती वो, भर देती शक्ति प्राणों में।
वो ज्ञान सूर्य प्रकट होता, दमके जीवन उजियारों में।।

कोई कहता शिव उसको, कोई गॉड, जेहोवा, अल्लाह है।
बस एक वही सबका मालिक, सद्गुरु, शिक्षक, मल्लाह है।।
उसकी ही गाथा गाई है ग्रन्थ, शास्त्र, पुराणों में।
वो ज्ञान सूर्य प्रकट होता, दमके जीवन उजियारों में।।

पावनता का परमसिन्धु, दुनिया नई बनाता है।
रहम, दया का वो सागर, शान्ति, प्रेम बरसाता है।।
बस एक वही तो बसता है आशा और विश्वासों में।
वो ज्ञान सूर्य प्रकट होता, दमके जीवन उजियारों में।।

सच्चे जीवन का सार वही, सृष्टि का आधार वही।
वो परमानन्द बड़ा प्यारा, सबका बस अधिकार वही।।
सत्य, सनातन, अविनाशी, दु:ख-भंजक वो विपदाओं में।
वो ज्ञान सूर्य प्रकट होता, दमके जीवन उजियारों में।।

प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के

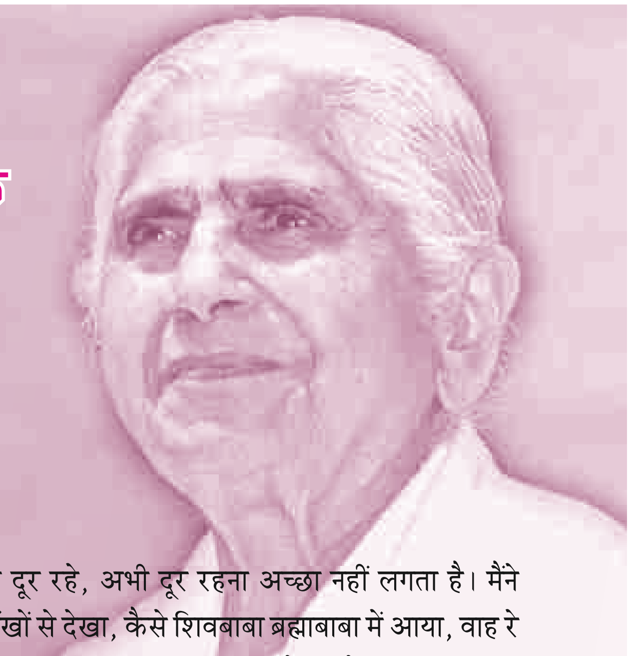

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधान स्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः आप बाबा को कैसे याद करती हैं?

उत्तरः बाबा को हमारे ऊपर दया आई, दुनिया से खींचके अपना बना लिया। तो बाबा कितना रहमदिल है, हमारी कोई कमी-कमजोरी नहीं देखी, चुटकी में मिटा दी। गलती से कुछ हो भी गया, सच्ची दिल से बाबा को बताओ तो बाबा कहेगा, आगे नहीं करना। ठीक है, कहकर बाबा क्षमा कर देगा। बाबा की याद में दया, रहम, क्षमा भरी पड़ी है। मुझे कोई पूछते, आप बाबा को कैसे याद करती हो? मुझे उसके सिवाए और कोई बात याद आती ही नहीं है। भले 8 दिन लंदन का चक्कर लगाया लेकिन जैसे स्वप्नवत् हो गया। कोई बात याद नहीं, अच्छी-अच्छी बातें हुईं, अच्छा हुआ। उसके लिए मेरी कोई महिमा करे, जरूरत नहीं है। महिमा सारी बाप की है। तीसरा नेत्र खोलके रचता की रचना को देखें तो वण्डर लगेगा, सिर्फ यह तीसरी आँख कभी बन्द न हो जाये या ये आँखें कभी लोभ, मोहवश न देखें क्योंकि देह-अभिमान वश देखेंगे तो कोई काम के नहीं रहेंगे।

अच्छी तरह सुनो, समाओ, स्वरूप में आओ। मीठा-मीठा बाबा प्यार से हमको कहता है, तुम मेरे सिकीलधे, लाडले बच्चे हो क्योंकि कल्प पहले वाले हो ना, फिर से मिले हो ना। हम भी कहेंगे, बाबा भी हमको मिला है ना। हमको बाबा मिला है, बाबा को हम मिले हैं। अभी किसका शुक्रिया मानें, बाबा का या ड्रामा का? हमने तो बहुत गुरु किये, शास्त्र पढ़े, चारों धामों की यात्राएँ कीं परन्तु हमारे से वह दूर रहे, अभी दूर रहना अच्छा नहीं लगता है। मैंने आँखों से देखा, कैसे शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया, वाह रे वाह, वाह बाबा वाह! वाह बाबा के बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह! जब से बाबा आया है, वाह-वाह हुआ है। जो व्हाई-व्हाई करते हैं वो हाय-हाय करते हैं इसलिए वाह बाबा वाह! वाह बाबा के बच्चे वाह!

प्रश्नः शिव बाबा से सकाश (शक्ति) लेने का आधार क्या है?

उत्तरः जब मैं दादी गुलजार को देखती हूँ तो अन्दर से आता है, बाबा ने कैसे इन्हें अपना रथ बना दिया, कमाल है इस रथ की! तो ईश्वरीय परिवार में स्नेह की सकाश लेना, खींचना यह एक बड़ा भारी पद्मापद्म भाग्य का काम है। ईश्वरीय स्नेह की सकाश चला रही है, चल रहे हैं। सच्चाई से यह सकाश मिली। सच्चाई में एक परसेन्ट भी मिक्स न हो तब सच तो बिठो नच कहेंगे। सच्चाई कदम-कदम पर बाबा को फॉलो करने में मदद करती है। एक कदम में 10 कदम बाबा की मदद है। दस कदम उठाओ तो 100 कदम मदद है, अभी 1000 गुना बाबा की मदद है क्योंकि हमको अपना मददगार बनाना है। वन्डरफुल है बाबा, वो भी होशियार है। मदद करके फिर आखिर हमारे को आगे रखता है। पहले-पहले बाबा ने कहा, सन शोज फादर, फादर शोज सन, सन का काम है बाबा का शो करना। बाप का काम है बच्चे को आगे रखना। बाप है तो कैसा, बच्चा है तो कैसा। बच्चे के फीचर्स से पता चलता है, यह किसका

बच्चा है। अभी मैं किसका बच्चा हूँ, फिर फ्यूचर मेरा कैसा होगा... ऐसे बाबा को प्यार से याद करते हो या ऑटोमेटिक उसकी याद है ही।

फालतू बात याद करके कर्म करने से कोई न कोई गलत काम हो जायेगा, एक्यूरेट नहीं होगा और याद में रहने से बाबा खुश, कर्म भी अच्छे होंगे। ये आँखें भूलें देखने के लिए नहीं हैं, ये कान फालतू सुनने के लिए नहीं हैं। संस्कार अनुसार पहले मन-बुद्धि ऐसे चलती थी लेकिन अभी बदल गये हैं, अभी मन शान्त है, बुद्धि शुद्ध है। किसी घड़ी भी मन शान्त रहे, यह बहुत बड़ी बात है। ऑटोमेटिक बुद्धि क्या सोचे, शुद्ध रहने के संस्कार बन रहे हैं। सच्चाई और प्रेम की सूक्ष्म स्नेह भरी सकाश मिलती है। कोई भी बात है, शरीर को कुछ होता है, शक्ति चला रही है। ईश्वर स्वयं मेरे ऊपर राज़ी हो करके सूक्ष्म सकाश की शक्ति दे रहा है। राज़ी नहीं होगा तो सकाश नहीं देगा, कहेगा, तुम्हारे कर्म, तुम जानो क्योंकि पुरुषार्थ में अटेन्शन नहीं है, बाबा को राज़ी नहीं कर सकेंगे।

प्रश्न: आत्म-अभिमानी कब बन सकेंगे?

उत्तर: आत्मा के ज्ञान की गहराई में जाओ तब ही आत्म-अभिमानी बन सकेंगे। मैं आत्मा शरीर में हूँ पर मुझ आत्मा को इस शरीर की विकारी कर्मेन्द्रियों के वश नहीं रहना है। मन, बुद्धि, संस्कार और पाँच विकारों को जान परमात्म शक्ति ले, 5 विकारों पर जीत पानी है, दिन-रात यही धुन लगी हुई है, मुझे मायाजीत बनना है। ये कर्मेन्द्रियां श्रेष्ठ कर्म करने के लिए हैं, इसके लिए मन शान्त, बुद्धि शुद्ध हो। कर्मेन्द्रियों के कारण मन चंचल है। बुद्धि में ज्ञान को धारण करो, परमात्मा से योग लगाओ, तो आत्मा में शक्ति आती है। फिर सेवा की बात आती है, दिन-रात यही भावना है, यही स्वप्न है कि सबकी अन्त मते सो गते अच्छी हो। सबकी सद्गति हो। वह सेवा कैसे होगी? मनसा शुभ भावना से। नि:स्वार्थ भाव है, निष्काम सेवा है। बाबा के अन्तिम महावाक्य हैं, बच्चे निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी हो रहना है। सेवा करते भी ऐसी स्थिति हो। ऐसे नहीं कि सेवा में ऐसा बिजी हो जायें जो यह स्थिति बनाने का समय ही न मिले। अभी आप सभी के चिंतन में एक ही बाबा हो और कोई चिंतन नहीं। मैं राइट हूँ, यह सिद्ध करना जरूरी नहीं है। सच, सच है। सच इतना सच है जो झूठ को खत्म करने वाला है। इतना सच्चा बाबा ने बनाया है जो मुझे पता ही नहीं है कि झूठ क्या होता है। जिनका सच्चा बनने का पुरुषार्थ कम है, उन पर बहुत तरस पड़ता है। मनसा सेवा का अभ्यास बढ़ाना है। वाचा से ज्ञान थोड़ा दो, कर्मणा से, सम्बन्ध से गुणदान दो। सम्बन्धों में गुणों का पता चलता है। हम राजयोगी, राजऋषि हैं, कर्मयोगी हैं, सतयुग की स्थापना करने के निमित्त हैं।

प्रश्न: विकर्माजीत बनने के लिए कौन-सा अटेन्शन चाहिए?

उत्तर: बाबा ने बताया है, नर ऐसी करनी करे जो श्री नारायण बन जाये, नारी लक्षण ऐसे धारण करे जो श्रीलक्ष्मी बन जाये। तो हर एक को लक्ष्मी-नारायण बनना है। लक्षण को कर्म में देखना है, कर्म में श्रेष्ठ कर्म की करनी दिखानी है। विकर्माजीत बनने के लिए अटेन्शन बहुत चाहिए। खुद के लिए शुभ चिंतन में रहना, औरों के लिए शुभ चिंतक बनना। यह क्यों बोलते हैं, क्या बोलते हैं... क्यों-क्या से बाबा ने छुड़ा दिया है। सिद्ध करने से पता नहीं चलेगा, सच्चा है या झूठा है। सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। सच्चाई में बल है। भगवान का बच्चा बनना माना खुद सच्चा बनना, तो ताकत आती है। वर्तमान समय दुनिया में चारों ओर मनुष्य चिंताओं में हैं, उन सबकी चिंतायें मिटानी हैं। उसके लिए शुभ चिंतन में रहना है और सारे विश्व के लिए शुभ चिंतक बनना है, यह बड़ा कोर्स है। बाप समान बनने के लिए शुभ चिंतन है। मेरा बाबा कैसा है, हमको देख दुनिया की आँखें खुल जायें, ये कौन हैं? जैसे सूर्य की किरणें मिल रही हैं, ऐसे हमें भी मास्टर ज्ञान सूर्य और ज्ञान सागर बनना है। ❖

ज्ञानामृत के पुराने पन्नों से...

शिवशक्तियों की जीवन कहानी

भारत में शक्ति पूजन का और नवरात्रों का बहुत ही महत्व है। प्रश्न उठता है कि ये शक्तियाँ कौन थीं? उनका इतना गायन क्यों होता है? उन्होंने कौन-सा उच्च कार्य किया? ये कब हुईं? उनके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है और उन्हें जानने से हमें क्या प्राप्ति होगी?

धन-ज्ञान-शक्ति की प्राप्ति की स्रोत देवियाँ

आप जानते हैं कि हर एक मनुष्य को जीवन में तीन चीजें अवश्य चाहिये होती हैं। उन में से एक है धन। धन के बिना मनुष्य के बहुत आवश्यक कार्य भी रुक जाते हैं। अत: मनुष्य अपनी दिनचर्या का बहुत-सा समय धन कमाने में ही लगा देता है। धन को प्राप्त करने के लिए मनुष्य लक्ष्मी का पूजन करता है। प्रश्न उठता है कि श्री लक्ष्मी ने अखुट धन कैसे और किससे पाया और हम स्वयं श्री लक्ष्मी के समान धनवान कैसे बन सकते हैं?

मनुष्य को दूसरी चीज़ चाहिए 'विद्या अथवा ज्ञान'। प्रसिद्ध है कि ज्ञान के बिना भी मनुष्य की गति नहीं है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए लोग सरस्वती का गायन-वन्दन करते हैं। विश्वविद्यालयों में भी सरस्वती को ज्ञान की देवी मानकर उनके चित्र वहाँ लगाये जाते हैं। सरस्वती को 'ज्ञान-ज्ञानेश्वरी' की उपाधि दी जाती है। प्रश्न है कि सरस्वती जी ने ज्ञान किससे प्राप्त किया और हम वह ज्ञान किससे प्राप्त कर सकते हैं?

मनुष्य तीसरी चीज चाहता है 'शक्ति'। मनुष्य को शारीरिक तथा आत्मिक दोनों शक्तियाँ चाहियें। अत: ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति इत्यादि के लिए भी मनुष्य सरस्वती, दुर्गा इत्यादि का वन्दन-पूजन करते हैं। परन्तु यहाँ भी प्रश्न उठता है कि शक्तियों को शक्ति किसने दी और हम उनके समान शक्तिवान कैसे बन सकते हैं? अत: श्री लक्ष्मी, श्री सरस्वती तथा श्री दुर्गा की जीवन-कहानी को जानना अत्यावश्यक है।

शक्तियों के नाम गुणवाचक

शक्तियों के 108 नाम प्रसिद्ध हैं। वे सभी लाक्षणिक अथवा गुणवाचक नाम हैं। उन नामों से या तो उनके पवित्र जीवन का और उनकी उच्च धारणाओं का परिचय मिलता है, या जिस काल में वे हुईं, उस समय का ज्ञान होता है, या परमपिता परमात्मा के साथ तथा मनुष्यमात्र के साथ उनके सम्बन्ध का बोध होता है या उनके कर्त्तव्यों का पता चलता है।

उदाहरणार्थ, शक्तियों के जो सरस्वती, ज्ञाना, विमला, तपस्विनी, सर्वशास्त्रमयी, त्रिनेत्री इत्यादि नाम हैं, उनसे यह परिचय मिलता है कि शक्तियों में ज्ञान शक्ति, योग-तपस्या की शक्ति और पवित्रता की शक्ति थी। 'कुमारी', 'कन्या' इत्यादि नामों से यह परिचय मिलता है कि वे कौमार्य व्रत (ब्रह्मचर्य) का पालन करती थीं और उनमें पवित्रता की धारणा थी। 'आद्या', 'आदिदेवी' इत्यादि नामों से यह ज्ञान होता है कि वे सृष्टि के आदिकाल में अर्थात् सतयुगी सृष्टि की स्थापना के कार्य के समय हुई थीं। इसी प्रकार, उनके 'ब्राह्मी', सरस्वती, भवानी (शिवपुत्री), भवप्रिया (अर्थात् शिव को प्रिय), 'शिवमय

शक्तियाँ’ इत्यादि नामों से यह बोध होता है कि वे प्रजापिता ब्रह्मा की ज्ञान-पुत्रियाँ थीं और उन्हें परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा ज्ञान शक्ति, योग शक्ति तथा पवित्रता की शक्ति दी थी। उनके दैहिक जन्म से संबंधित नाम और माता-पिता तो भिन्न थे परन्तु जब उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त किया और परमपिता परमात्मा से आत्मिक संबंध जोड़ा तब उनके सरस्वती, शारदा, ज्ञाना, ब्राह्मी, कुमारी इत्यादि अलौकिक नाम प्रसिद्ध हुए। तब उन्होंने अन्य मनुष्यों को भी वह ईश्वरीय ज्ञान दिया, उनके आसुरी लक्षणों का अन्त किया और उनकी आत्माओं को शान्त और शीतल किया। इस कारण उनके शीतला, दुर्गा तथा असुर-संहारक इत्यादि कर्त्तव्यवाचक प्रसिद्ध नाम हैं। प्रजापिता अथवा जगत्-पिता ब्रह्मा की कुमारी ‘सरस्वती’ को ‘अम्बा’ अथवा ‘जगदम्बा’ भी इसीलिए कहा जाता है कि उन्होंने ज्ञान द्वारा सभी मनुष्यात्माओं को नया आध्यात्मिक जन्म अथवा मरजीवा जन्म दिया, वरना आप समझ सकते हैं कि लौकिक अर्थात् दैहिक रीति से तो कोई भी सारे जगत् की एक ‘माता’ नहीं हो सकती। सरस्वती को ‘जगदम्बा’ नाम से सम्बोधित करते हैं तथापि वे यह नहीं जानते कि ‘जगतपिता’ कौन हैं?

शक्तियों का गायन-वन्दन रात्रि को क्यों?

रात्रि में ही शक्तियों के गायन-वन्दन की जो परिपाटी चली आती है, उसके पीछे भी एक महत्वपूर्ण इतिहास छिपा हुआ है। वास्तव में ‘रात्रि’ शब्द उस आम रात्रि का वाचक नहीं है जो चौबीस घन्टे में एक बार आती है। लाक्षणिक दृष्टि से सतयुग और त्रेतायुग को ‘ब्रह्मा का दिन’ कहना चाहिए क्योंकि उस काल में जन-जीवन प्रकाशमय होता है, विकारों की कालिमा से आच्छादित नहीं होता बल्कि सतोगुणी होता है। द्वापर और कलियुग को ‘ब्रह्मा की रात्रि’ कहना उचित है क्योंकि इन दो युगों में मनुष्य अज्ञानांधकार में और तमोगुणी होते हैं।

जब कलियुग का अथवा ब्रह्मा की रात्रि का अन्त होता है तब सभी आत्मायें आसुरी गुणों से पीड़ित, अज्ञान-निद्रा में सोई हुई और आत्मिक शक्ति से हीन होती हैं। ऐसी अज्ञान-रात्रि के समय परमपिता परमात्मा ज्योतिर्लिंगम शिव एक मध्यम वर्ग के मनुष्य के वृद्ध तन में अवतरित (प्रविष्ट) होते हैं और उसका दैहिक जन्म के समय का नाम बदल कर ‘प्रजापिता ब्रह्मा’ नाम रखते हैं। उनके मुखार्विंद द्वारा जो नर-नारियाँ ज्ञान सुनकर, अपने जीवन को परिवर्तित करके नया आध्यात्मिक जन्म पाते हैं, वे ही सच्चे अर्थ में ब्रह्मावत्स हैं। उन ब्रह्मचर्यव्रत धारिणी कन्याओं-माताओं को ‘शक्तियाँ’ कहते हैं, क्योंकि वे ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव से ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति और पवित्रता-शक्ति प्राप्त करती हैं। अत: उस ‘रात्रि’ की याद में तथा उन शक्तियों की स्मृति में आज भी लोग ‘रात्रि’ ही को शक्तियों का गुण-गान करते और नवरात्रि का त्यौहार मनाते हैं।

अब भी नवरात्रों में भक्तजन शक्तियों के चित्रों अथवा मूर्तियों के सामने दीपक जगाकर कहते हैं, ‘‘हे अम्बे, जैसे यह दीपक अंधकार को हर कर चहुँ ओर प्रकाश कर रहा है, आप भी हमारे जीवन में प्रकाश कर दो, हमारे अज्ञानान्धकार को हर लो, माँ। हमें भी शक्ति दो...।’’

भक्ति करते हैं, प्राप्ति नहीं करते

आज लोग शक्तियों की भक्ति तो करते हैं परन्तु उनकी तरह शक्ति की प्राप्ति नहीं करते। वे नवरात्रों के दिनों में मिट्टी के दीपक तो जगाते हैं परन्तु उस जागती-ज्योति शिव से, जिसने कि शक्तियों को भी शक्ति दी थी, योग लगाकर स्वयं अपनी आत्मा की ज्योति नहीं जगाते। वे शक्त्यिों को तो ‘तपस्विनी’, ‘ब्रह्मचारिणी’ इत्यादि मानते हैं परन्तु स्वयं केवल नवरात्रों में ही ब्रह्मचर्य का पालन करके फिर से पतित हो जाते हैं। वे सरस्वती को ‘माँ’ अथवा ‘अम्बे’ शब्द से पुकारते हैं परन्तु वे उस अलौकिक एवं पवित्र माँ की तरह स्वयं पवित्र नहीं बनते। वे कहते हैं कि अब तो कलियुग है, आज के युग में पवित्र बनना असम्भव है परन्तु वास्तव में ऐसा न समझ कर उन्हें आज के युग को

'कर युग' समझना चाहिए और बजाय शाब्दिक स्तुति के स्वयं ज्ञानवान, तपस्वी, विमल और शक्तिवान बनने का पुरुषार्थ करना चाहिए क्योंकि अब वही 'रात्रि' आ चुकी है। अब परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर कल्प पूर्व की तरह जगदम्बा सरस्वती तथा अन्यान्य शक्तियों द्वारा आसुरी अवगुणों का संहार करा रहे हैं।

शक्तियों के हाथ में अस्त्र-शस्त्र

'शक्ति' से अभिप्राय आध्यात्मिक शक्ति अथवा ज्ञान, योग तथा पवित्रता की शक्ति है, न कि माया की शक्ति या हिंसा करने की शक्ति। परन्तु आज भक्त लोग समझते हैं कि काली या दुर्गा में शत्रुओं का अथवा असुरों का संहार करने की शक्ति थी। चित्रों में शक्तियों के हाथों में भाले, खड्ग इत्यादि भी प्रदर्शित किए होते हैं। परन्तु वास्तव में 'शक्तियों' के हाथों में ये शस्त्र नहीं थे। हिंसाकारी व्यक्तियों का पूजन कभी नहीं हुआ करता। वन्दनीय शक्तियों के पास असुरों का वध करने के लिए 'ज्ञान-शस्त्र' थे। मानो कोई व्यक्ति हमें उपदेश देता है कि ज्ञान रूपी तलवार से कामरूपी असुर को मारो। इस उपदेश को चित्रकार चित्र के रूप में अंकित करते समय हमारे हाथ में तलवार दिखाएगा और हमारे सामने काम को भयानक असुर के रूप में खड़ा कर देगा। इसी प्रकार शक्तियों की अनेक भुजाएँ तथा उनमें नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र दिखाने का भी यही अभिप्राय है कि काम, क्रोधादि आसुरी लक्षणों का अन्त करने के लिए उनमें बहुत शक्ति थी और ज्ञान की अनेक धारणाएँ थीं। वरना आप सोचिए कि अहिंसा तो धर्म का प्रथम और परम लक्षण है। अत: इन धर्मयुक्त एवं वन्दनीय शक्तियों के हाथों में हिंसा के शस्त्र मानना अज्ञानता और अनर्थ है।

परन्तु आज इन रहस्यों की ओर ध्यान देने की बजाय लोग नवरात्रि के अवसर पर सरस्वती, दुर्गा इत्यादि की 'प्रतिमा' बनाते हैं, उन्हें वस्त्रों तथा आभूषणों से सजाते और भोग लगाते हैं और अन्त में पूजा इत्यादि करके उन्हें जल में प्रवाहित कर देते हैं। मानो कि वे शक्तियों की भी स्थापना, पालना और फिर अन्त कर देते हैं, भला यह कैसी प्रीति है?

देवियों के प्रति सच्चा प्यार तो तब सिद्ध हो जब हम उनको, उनके महान कर्मों को हर पल, हर घड़ी सामने रखें और उनका अनुसरण करें। ❖

श्रद्धांजलि

ब्रह्माकुमारी चन्द्रा बहन का जन्म सन् 1931 में कराची में हुआ। आपके माता-पिता वहाँ स्थापित ओम मंडली से जुड़े हुए थे। विभाजन के बाद दिल्ली में निवास करते हुए सन् 1954 से आपके परिवार का पुन: ब्रह्माकुमारी बहनों से सम्पर्क हुआ और सन् 1962 में साकार मम्मा-बाबा से सम्मुख मिलन मनाकर आपने वरदानों से अपने को सजाया। आपने लन्दन, अमेरिका, कनाडा आदि अनेक देशों में आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की। सन् 1977 से आप मॉरिशस में ईश्वरीय सेवारत रही।

आप सादगी की मूर्ति थी, आपका नि:स्वार्थ स्नेह लोगों के दिलों में यादगार बना देता था, आपका शान्त स्वभाव तथा सदा देने की भावना लोगों को आकर्षित कर अपना बना लेती थी। आपकी मधुर वाणी से बहता हुआ सत्य ज्ञान का अमृत लोगों को प्रेरित करता था और आपकी सरल मुस्कान ईश्वरीय प्रेम को प्रत्यक्ष करती थी। आपने 15 अगस्त, 2015 को रात को 9.55 पर (भारतीय समय रात्रि 11.30 बजे) भौतिक देह का त्याग कर बापदादा की गोद ली। आपके परिवार के अनेक सदस्य ईश्वरीय ज्ञान में समर्पित रूप से सेवाएँ दे रहे हैं। न्यूयार्क की मोहिनी बहन आपकी लौकिक छोटी बहन हैं। ऐसी गुणमूर्त, त्यागमूर्त, स्नेहमूर्त आत्मा को सम्पूर्ण दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 23

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

प्राण प्यारे साकार ब्रह्मा बाबा ने मुझे ट्रस्ट का ट्रस्टी बनाकर कारोबार करने के लिए जो अनेक शिक्षायें दीं उन्हें मैं इस लेखमाला में लिख रहा हूँ। इन शिक्षाओं से हमें मालूम पड़ता है कि बाबा का शिक्षक के रूप में क्या पार्ट है और कैसे वे हमें शिक्षा देकर सतयुगी कारोबार के लायक बनाते हैं। हमारे घर में बाबा के दो प्रकार के पत्र आते थे – एक मेरे प्रति जिनमें बाबा शिक्षा देते थे कि यज्ञ का कानूनी कारोबार कैसे करना है और दूसरे मेरे मौसेरे भाई मधु के प्रति जिनमें बाबा बताते थे कि यज्ञ के लिए चीज़ों की खरीदारी कैसे करनी है। उन्हीं दिनों बाबा ने मुझे एक पत्र लिखा जिसमें कहा कि **बच्चे, सदा ही ड्रामा को याद रखो। ड्रामा को याद रखेंगे तो सदा ही हर प्रकार की समस्या से दूर रहेंगे।** हम सभी आत्मायें ड्रामा के बंधन में बंधायमान हैं। हरेक आत्मा अपना निश्चित पार्ट बजा रही है और उसी अनुसार उसका आचार, विचार एवं व्यवहार होता है।

इसी संदर्भ में कई हमसे पूछते हैं कि अगर ड्रामा अनुसार ही हमें पार्ट बजाना है तो पुरुषार्थ क्यों करना है? इसके जवाब में मैं एक उदाहरण देता हूँ। आदि शंकराचार्य ने कहा था – जगत मिथ्यम् ब्रह्म सत्यम्। एक बार जब वे रास्ते से जा रहे थे तो सामने एक पागल हाथी आ गया। आदि शंकराचार्य ने अपना रास्ता बदल लिया। तब उनके साथ जो उनके शिष्य थे उन्होंने पूछा कि अगर जगत मिथ्या है तो आप उस हाथी को देखकर रास्ते से क्यों हट गये? तब शंकराचार्य ने उत्तर दिया कि अगर हाथी मिथ्या था तो उस रास्ते से मेरा हटना भी मिथ्या था। इस प्रकार सिद्धांत एक होता है लेकिन हम उसे समझने में गलती कर देते हैं। **हमें सिद्धान्त को यथार्थ रीति से समझना है।** ऐसे ही ड्रामा का भी सिद्धान्त है। बाबा ने हमें बताया है कि ड्रामा का ज्ञान कब यूज करना है जब बात पूरी हो जाये और हमारी इच्छानुरूप परिणाम न आये। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम कुछ भी पुरुषार्थ न करें और ड्रामा पर आधारित होकर निष्क्रिय बैठे रहें।

हमें मालूम नहीं है कि हमारा पार्ट क्या है, हमें तो सिर्फ इतना पता है कि हमें केवल श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर ऊँच पद की प्राप्ति करनी है। जैसे कार चलाने वाले ड्राइवर को मालूम होता है कि उसके दायें पैर के पास दो चीजें हैं एक accelerator (गतिवर्द्धक यंत्र) और दूसरा break (अवरोध)। जो आदर्श गाड़ी चलाने वाले ड्राइवर हैं उन्हें यह अच्छी रीति मालूम होता है कि कैसे और कब दायें पाँव से कार की गति (speed) को बढ़ाना है और कब ब्रेक के द्वारा गाड़ी को नियंत्रित (control) करना है। इस प्रकार दायां पैर गति को बढ़ाता भी है तो गति को रोककर एक्सीडेंट को टालता भी है। अगर ब्रेक की बजाय स्पीड बढ़ायें तो भी एक्सीडेंट होता है और स्पीड बढ़ाने की बजाय ब्रेक लगाते हैं तो भी एक्सीडेंट होता है अर्थात् जिस समय जो कार्य करना है वहीं करेंगे तो ही कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न होता है। ठीक इसी रीति से ड्रामा के ज्ञान को भी यूज़ करना है। अगर पूरा पुरुषार्थ करने के बाद भी कार्य में सफलता नहीं मिलती है तो ड्रामा का ज्ञान यूज़ करना होता है। ड्रामा का ज्ञान हमें ढाल के रूप में यूज़ करना है।

ड्रामा के ज्ञान को यथार्थ रूप में कैसे यूज़ करें इसका एक उदाहरण मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ – 1965 में मातेश्वरी जी अमृतसर, दिल्ली तथा हापुड़ आदि स्थानों पर सेवायें करके आबू आये थे। मातेश्वरी जी ने रात्रि क्लास में हापुड़ में जो हंगामा हुआ उसका भी सविस्तार समाचार सुनाया। मैंने जब हापुड़ का समाचार सुना तो मेरा मन विचलित हुआ इसलिए दूसरे दिन सुबह मुरली क्लास के बाद मैं साकार

बाबा के पास गया और मैंने बाबा को कहा कि बाबा हापुड़ का समाचार सुनकर आपको क्या लगा? आपका मन विचलित तो नहीं हुआ? बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, मेरा ड्रामा में सम्पूर्ण निश्चय है, ड्रामा में 5000 वर्ष पहले जैसे स्थापना हुई थी वैसे ही अभी भी हो रही है और अगले कल्प में अर्थात् 5000 वर्ष बाद भी ऐसे ही स्थापना होगी। हर कल्प यही रिपीट होता रहेगा तो इसके बारे में मन को विचलित क्यों होने दें? अगर हमारा ड्रामा पर सम्पूर्ण निश्चय रहेगा और ड्रामा की हर सीन (scene) को देखते हुए हम अचल रहेंगे तो हमारी स्थिति अंगद समान अचल-अडोल बन जायेगी।

हमारी दादियों को भी ड्रामा तथा ब्रह्मा बाबा के ऊपर संपूर्ण निश्चय है। एक बार जब दादी जानकी जी अमृतसर में थे तब उन्हें समाचार मिला कि जापान में World Religious Conference (विश्व धर्म सम्मेलन) होने जा रही है। उसके लिए बाबा ने दादी प्रकाशमणि जी और दादी रतनमोहिनी जी को कलकत्ता भेजा और कहा कि बच्ची आप कलकत्ता जाना वहां पर आपका सब प्रकार का प्रबंध हो जायेगा। जब दादी जी जापान से वापिस भारत में आये तब मैंने दादी जी से पूछा कि दादीजी जब आपको बाबा ने कलकत्ता भेजा तब क्या आपको उस कॉन्फ्रेन्स के बारे में कुछ पता था कि वहाँ कौन-सी कॉन्फ्रेन्स है, कब है और कहाँ होने वाली है? पासपोर्ट, वीजा आदि के बारे में कुछ पता था? आपने बाबा से इस बारे में कुछ पूछा नहीं? दादीजी ने कहा कि नहीं, मुझे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था और ना ही हमने बाबा से इसके बारे में कुछ पूछा। एक तो हमें बाबा पर सम्पूर्ण निश्चय था और दूसरा ड्रामा पर, इसलिए जैसे ही बाबा ने हमें कलकत्ता जाने के लिए कहा तो हम चले गये। दादीजी का यह अनुभव बताता है कि बाबा के ऊपर और ड्रामा के ऊपर सौ प्रतिशत निश्चय होना जरूरी है। अगर दोनों में से एक में भी हमारा निश्चय कम है तो हमें कार्य में सम्पूर्ण परिणाम प्राप्त नहीं हो सकता।

ब्रह्मा बाबा और दादी का यह अनुभव हमें बहुत बातें सिखाता है। मैंने पहले भी लिखा था कि 1971 में जब हम विदेश यात्रा के लिए यज्ञ से स्वीकृति लेकर निकले थे तो अव्यक्त बापदादा ने हमें कहा था कि आपके लिए बाबा ने ड्रामा अनुसार सब प्रकार का प्रबंध करके रखा है। आपको तो केवल जैसे बिजली का बटन दबाते हैं उतनी ही मेहनत करनी है। जब हम 6 लोग भारत से विदेश के लिए निकले तब हरेक के पास केवल 6-6 डॉलर्स थे अर्थात् कुल 36 डॉलर्स थे। उन 36 डॉलर्स में हमें पूरे विश्व का चक्र लगाना था। एक सेवाकेन्द्र विश्व के पूर्व में तो एक सेवाकेन्द्र पश्चिम में खोलना था। परंतु हमारा भी बाबा और ड्रामा में पूरा निश्चय था इसलिए हमने भी सफलतापूर्वक सेवायें की। विदेश जाने के समय अव्यक्त बापदादा ने हमें यह भी कहा था कि बच्चे, आप लोग विदेश में देवता रूप में जा रहे हो इसलिए कभी भी किसी से कुछ माँगना नहीं है, ड्रामानुसार आपको अपने आप प्रबंध मिल जायेगा। बाबा की इस बात का हमने प्रैक्टिकल अनुभव किया। लन्दन में तो मुरली दादा (जयन्ति बहनजी के लौकिक पिताजी) के घर में ही रहे थे इसलिए वहां पर तो कोई प्रश्न ही नहीं था। परंतु अमेरिका में भी हमें फ्री में मकान मिला, फ्री में हॉल मिला। जिस हॉल का किराया 300 डॉलर प्रतिदिन था वह हॉल हमें फ्री में मिला। इस प्रकार हमें सेवाओं के सब साधन सहज मिले। यह निश्चय ही सफलता का साधन है। जब हम परमात्मा पिता एवं ड्रामा में सम्पूर्ण श्रद्धा रखते हैं तो निश्चित ही हम आगे बढ़ते जाते हैं।

ऐसे ही जब 18 जनवरी, 1969 को ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तब अनेक आत्माओं के मन में अनेक प्रकार के प्रश्न आये, अनेक प्रकार के संकल्प-विकल्प उठे। मेरे पास भी कई ऐसी आत्मायें आईं। ये सब मुझसे पूछते थे कि अब यज्ञ कौन चलायेगा, कैसे चलेगा आदि-आदि। परंतु मुझे तो ब्रह्मा बाबा की एक बात पक्की याद थी कि 5000 वर्ष पहले जैसे स्थापना हुई थी वैसे ही होगी और यही जवाब मैं सभी को देता था। बाबा ने मुझे जो यह ड्रामा का ज्ञान दिया था वह मुझे अपने जीवन में बहुत उपयोगी हुआ है।

बाबा त्रिकालदर्शी हैं इसलिए कई बातें अपनी मर्यादा में रहकर बताते हैं और उस मर्यादा का पालन करना हमें भी सिखलाते हैं। सन् 1963 में वाटर्लू मैन्शन में राधे माता आती थी जो बाल विधवा थी और उस समय उनके पास 1200 रुपये की सम्पत्ति थी जिसका उन्होंने यज्ञ के नाम पर वसीयतनामा (Will) करके रखा था। शरीर छोड़ने के बाद उनको भोग लगाया गया तो वे संदेशी के तन में आये। तब मैंने उनसे पूछा कि आपने अभी कहाँ जन्म लिया है? उन्होंने मुझसे कहा कि मैं जब वतन से नीचे आ रही थी तब मैंने बाबा से पूछा था कि बाबा, रमेश भाई मुझसे यह प्रश्न पूछेंगे कि आप अभी कहाँ हो, आपने कहाँ जन्म लिया है तो मैं क्या कहूँ? बाबा ने कहा कि बच्ची आपकी बुद्धि क्लीयर है, अगर आप बताना चाहो तो बताओ, नहीं तो नहीं। फिर राधे माता ने कहा कि बाबा जैसे आप श्रीमत देंगे वैसा ही मैं करूँगी। तब बाबा ने उन्हें कहा कि रमेश बच्चे को कहना कि यह ड्रामा रीयल है इसलिए उसकी मर्यादा में रहकर सब कार्य चलें तो अच्छा होगा। बाबा ने कहा कि यह सृष्टि रूपी ड्रामा आर्टीफिशियल नहीं है, यह रीयल है। **त्रिकालदर्शी होने के बावजूद भी बाबा ड्रामा की मर्यादा में रहकर कार्य करते हैं तथा हमें भी ऐसा करने की शिक्षा देते हैं।** हमारी मातेश्वरी जी भी सदा यह कहती थी - बनी बनाई बन रही... बाकी कुछ बननी नाही।

विश्व की सभी आत्मायें ड्रामा के बंधन में बंधी हुई हैं और उसी अनुसार कार्य कर रही हैं। परंतु कई प्रश्न पूछते हैं कि ड्रामा जब निश्चित है तो हम पुरुषार्थ क्यों करें? परंतु हम जानते हैं कि शास्त्रों में दशावतार के बाद कल्कि अवतार है, उसके बाद सतयुग होता है। इस्लाम धर्म में भी कयामत का दिन गाया जाता है तथा ईसाई धर्म में भी The Day of Last Judgement (अंतिम निर्णय का दिन) की बात कही है। मनु स्मृति में भी विनाश के बाद नई सृष्टि की स्थापना होने की बात कही गई है। इस प्रकार सभी धर्मों में इस बात को मानते हैं। ये सब बातें बताती हैं कि सृष्टि रूपी ड्रामा पूर्व निश्चित एवं सुनिश्चित है और यह रिपीट होता रहता है। जब हम भक्ति मार्ग में पढ़ते हैं तो ये बातें समझ में नहीं आती परंतु ज्ञान में आने के बाद ये सब बातें पता पड़ती हैं और हम समझते हैं कि जो कुछ हो रहा है, वह 5000 वर्ष पहले भी हुआ था और अगले कल्प में ऐसा ही होगा।

ड्रामा को अगर हम याद रखेंगे तो हमें पता रहेगा कि सभी आत्मायें ड्रामानुसार अपना-अपना पार्ट बजाती हैं और फिर उनके स्वभाव-संस्कारों को देखकर किसी को भी नकारात्मक भावना (Negative feeling) नहीं आयेगी। अव्यक्त बापदादा ने भी हमें सिखाया है कि **चिल्लाओ नहीं परंतु चलाओ**। जैसे एक माँ अपने छोटे बच्चे की हर बात को समझकर उसे चलाती है, ऐसे ही हमें भी अपनी प्रजा या साथियों को चलाना सीखना है। जो अभी ड्रामानुसार सभी आत्माओं के पार्ट को समझकर उसी अनुसार चलायेंगे वही भविष्य में भी विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे और विश्व राज्य कारोबार भी अच्छी रीति सम्भालेंगे। हमें बाबा ने जो ज्ञान दिया है वह केवल theoretical (सैद्धांतिक) नहीं है परंतु practical (व्यवहारिक) भी है। हमें इस ज्ञान को practical में लाना है। जैसे दुनियावी पढ़ाई में theory के साथ-साथ practical भी होता है और जब दोनों में पास होते हैं तभी पास कहलाते हैं ऐसे ही यह ज्ञान है, इसमें हमें theory और practical दोनों में पास होना है।

मैंने अज्ञान काल में एक किताब पढ़ी थी 'School for Scoundrels (गुण्डे बनने का विद्यालय)' जिसमें ऐसे विद्यालय का वर्णन था जहां पर बच्चों को गुंडे बनने की शिक्षा दी जाती थी। उस विद्यालय में प्रोफेसर पहले बच्चों को theoretical (सैद्धांतिक) और फिर practical (व्यवहारिक) ज्ञान देते थे। जो बच्चे जितनी सफलतापूर्वक गुण्डागर्दी करते थे उतने अच्छे मार्क्स से पास होते थे और उन्हें फिर सर्टिफिकेट मिलता था। इस प्रकार का ज्ञान मनुष्य को नकारात्मक बना देता है।

परंतु हमारा यह विश्व विद्यालय 'School for Deitism (देवता बनने का विद्यालय)' है अर्थात् देवी-देवता बनने का विश्व विद्यालय है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हमें सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी देवता बनने की शिक्षा दी जाती है जिसके लिए सभी प्रकार के मूल्यों की शिक्षा देते हैं, साथ-साथ ड्रामा का भी ज्ञान देते हैं। इस ईश्वरीय ज्ञान को जो भी अच्छी रीति अपने जीवन में धारण करता है वह उतना ऊँच पद पाता है अर्थात् विश्व राज्य अधिकारी बनता है।

ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में भी practical अनुभव बहुत उपयोगी होता है। हम जानते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान में चार सब्जेक्ट हैं- ज्ञान, योग, धारणा एवं सेवा। जो भी ज्ञान-मुरली हम सुनते हैं उसी अनुसार हम योग करते हैं और धारणा करते हैं परंतु सेवा के क्षेत्र में हमने जो ज्ञान सुना और योग से स्वयं में परिवर्तन लाया तथा जो धारणा की उसका प्रैक्टिकल सबूत देना होता है। जब तक हम ड्रामा की पटरी पर निश्चयबुद्धि होकर नहीं चलते तब तक हम संशयबुद्धि बने रहेंगे। बाबा ने कहा है कि **निश्चयबुद्धि विजयन्ति**। इसलिए सेवा क्षेत्र में या जीवन में या कारोबार में कितनी भी हलचल की परिस्थिति हो, हमें बाबा और ड्रामा पर सम्पूर्ण निश्चय रखकर चलना है तभी हम आगे बढ़ सकेंगे और अंत में विजयी बनेंगे। जैसे हमारा स्लोगन है – पवित्र बनो, योगी बनो वैसे ही उसमें addition करना पड़ेगा कि **ड्रामा की ढाल वाले बनो**। इस ड्रामा की ढाल का उचित रीति से हम उपयोग करेंगे तो निश्चिंत बनेंगे और विजय भी निश्चित है। यही इस लेख को लिखने का मूल उद्देश्य है। आशा है कि आप सभी पाठकगण भी इन बातों को समझकर अपने जीवन में ड्रामा की ढाल का सदुपयोग कर आगे बढ़ते रहेंगे। ❖

श्रद्धांजलि

ब्रह्माकुमारी शीला माताजी प्रतिष्ठित आर्य समाजी परिवार से थी और श्रीकृष्ण की अटूट भक्तिन थी। ईश्वरीय ज्ञान आपको दिल्ली में सन् 1971 में मिला। एक प्रात: चार बजे के अद्भुत अनुभव ने आपको ईश्वरीय ज्ञान में दृढ़ निश्चय बुद्धि बनाया। अनुभव में आपने ज्योतिबिन्दु परमपिता परमात्मा शिव के प्रकाश को देखा और उनकी किरणों को करंट की तरह अपने में समाते हुए महसूस किया, ब्रह्मा बाबा को भी सामने देखा। जुलाई, 1971 में परिवार सहित, दिल्ली से आबू पर्वत निवासी बनने के बाद आपने कुछ समय आध्यात्मिक संग्रहालय में तथा सन् 1975 में चण्डीगढ़ में भी ईश्वरीय सेवाएँ दी। आपका स्वभाव अति मधुर तथा बोल और कर्म प्रेरणादायी थे। आपकी दोनों लौकिक सुपुत्रियाँ ब्र.कु.बिन्नी (ग्लोबल हॉस्पिटल), ब्र.कु.नीना (मुम्बई), एक सुपुत्र ब्र.कु.राकेश तथा युगल ब्र.कु.सत्यदेव सभी ईश्वरीय सेवारत हैं। आपने 25 जुलाई, प्रात: एक बजकर बाइस मिनट पर भौतिक देह को त्यागकर बापदादा की गोद ली। लौकिक-अलौकिक परिवार ऐसी त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी आत्मा को बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। ❖

मौन और मुसकान – दो शक्तिशाली हथियार होते हैं। मुस्कान से कई समस्याएँ हल की जा सकती हैं और मौन रहकर कई समस्याओं को दूर रखा जा सकता है।

सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गये

ब्रह्माकुमार ताराप्रसाद, भवानीपाटना (उड़ीसा)

सारे भारत में उड़ीसा प्रान्त के कालाहाण्डी जिले को सबसे पिछड़ा और कठोर माना जाता है, और तो और अतीत में यह असुरों का राज्य था, ऐसी मान्यताएँ भी हैं। पर महापरिवर्तन के इस समय में परमात्म ज्ञान की अमृतधारा से ऐसी कठोर धरती पर भी सुगन्धित फूलों के पौधे उगने लगे हैं। वर्षों की तपस्या के बाद, इस जिले की कई आत्माओं के जीवन परिवर्तन की कहानी, इस धरती की नकारात्मक छवि को सकारात्मकता की ओर ले जाने में सक्षम हो रही है। प्रस्तुत है ब्र.कु.ताराप्रसाद भाई के जीवन परिवर्तन की कहानी उन्हीं के शब्दों में – ब्र.कु.सुधीर

मेरा लौकिक जन्म कालाहाण्डी जिले के भवानीपाटना शहर में ब्राह्मण परिवार में हुआ जहाँ रोज सुबह-शाम देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी। मुझे इन कर्मकाण्डों पर विश्वास न था, इन्हें देख मन में कई प्रश्न उठ खड़े होते थे कि भला इन पत्थरों को पूजने से क्या मिलेगा। धीरे-धीरे मैं बड़ा होता गया तो जीवन के बारे में मेरे प्रश्न भी बड़े होते गये। मैं दूसरों के जीवन जीने के ढंग को देखकर इसी सोच में डूब जाता था कि जन्म होना, बड़ा होना, पढ़ाई करना, नौकरी करना, शादी करना, बच्चे पैदा करना, बूढ़ा होना और फिर मर जाना, क्या यही जीवन है? जन्म लेते समय तो हमें पता नहीं होता कि हमने क्यों जन्म लिया पर अगर मरते समय तक भी पता न चले कि जन्म क्यों लिया, तो ऐसे जीवन का क्या उद्देश्य? ये कठोर सवाल मुझे भयभीत कर देते थे पर उत्तर भी तो नहीं मिलते थे।

नशे के कारण बढ़ी परेशानियाँ

पिताजी पुलिस विभाग में एस.वी.कार्यालय में एकाउन्टेन्ट (Accountant) के रूप में कार्यरत थे। अनेक परिस्थितियाँ झेलता हुआ आखिर मैं एक कम्पनी में कार्यरत हुआ। धीरे-धीरे वहाँ कार्य बढ़ता गया। पिताजी के सेवानिवृत्त होने के बाद परिवार की सारी ज़िम्मेवारी मेरे ऊपर आ पड़ी। छोटे भाई ने प्राइवेट कम्पनी से मिले जॉब को ठुकरा दिया जिससे उसकी पढ़ाई अर्थ लिये गये बैंक के कर्जे के दबाव ने हमारी आर्थिक स्थिति को और कमजोर कर दिया। इन सब कारणों से मैं तनावग्रस्त रहने लगा और अज्ञानतावश नशे को ही अपना सहारा बना लिया। रोज रात को शराब पीकर आता पर जब सुबह नींद से जागता तो अपने आपसे घृणा आती कि मैं यह क्या कर रहा हूँ? जिस घर में इतने नियम और संस्कार पालन किए जाते हैं, उसी को मैं अपवित्र कर रहा हूँ! पर यह ग्लानि दिन भर के काम-काज में मलिन पड़ जाती और शाम को दोस्तों के साथ मिलकर फिर वही ऐयाशी शुरू हो जाती। पर नशा करने से भला परेशानी और समस्याएँ कभी कम हो जाती हैं क्या? मेरी परेशानी और भी कई गुणा बढ़ गयी।

शराब पीने के लिए दूसरों को प्रोत्साहन

मेरे पिताजी मानसिक रोगी हो गए। माताजी का एक पैर टूट गया, सही इलाज ना हो पाने के कारण उनका चलना भी मुश्किल हो गया। माँ अपने दुख से ज्यादा पिताजी के बारे में सोच कर रोती थी। मुझसे उनका दुख देखा न जाता था। मैंने अपनी तरफ से दोनों का इलाज कराने की बहुत कोशिशें कीं पर सब नाकाम रहीं इस कारण मैं और अधिक तनावग्रस्त होने लगा। स्वभाव बहुत रूखा बन गया। बात-बात पर क्रोध और चिड़चिड़ापन चेहरे पर साफ दिखने लगा। मेरा नशा और भी बढ़ गया। मैं ऐसा शराबी बन गया

जो ऑफिस में अपने सहकर्मियों को भी शराब पीने के लिए बड़े शौक से उत्साहित करने लगा।

अहंकार का पर्दा

एक दिन की घटना है, काम वाले व्यक्ति के द्वारा एक काम ठीक न किए जाने पर मैं आग बबूला हो, गाली-गलौज करता हुआ जब घर से बाहर निकला तो सामने से मेरी पूर्व कम्पनी के वरिष्ठ अधिकारी जा रहे थे। जब हम इकट्ठे कार्यरत थे तो अक्सर वे हमारे घर ही रहा करते थे। तब हमारे घर की हालत काफी नाजुक थी। मेरे लिए अपने अहंकार का प्रदर्शन करने का यही सबसे अच्छा मौका था इसलिए मैंने उनको अपने घर बुलाया ताकि दिखा सकूँ कि कंपनी बदलने के बाद भी मैं कितनी शानो-शौकत से रहता हूँ। मेरी आँखों पर पड़े अहंकार के पर्दे ने मुझे यह देखने का मौका ही नहीं दिया कि मेरे सामने बैठे ये इन्सान केवल मेरे पूर्व अधिकारी ही नहीं बल्कि जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले एक ब्रह्माकुमार भी हैं। जी हाँ, मेरे पूर्व अधिकारी ब्र.कु.दुर्गेश भाई जी बड़ी ही नम्रतापूर्वक मेरे सारे अभिमानी नखरे देखते रहे, कहा कुछ भी नहीं क्योंकि उन्हें स्पष्ट दिख रहा था कि इस अहंकार के झीने पर्दे के पार परेशानियाँ कितनी ज्यादा हैं।

न चाहते भी आश्रम के अन्दर गया

जब वे चलने को तत्पर हुए तो मैंने उन्हें मोटर साइकिल पर छोड़ आने का अनुरोध किया। हम चल पड़े, रास्ते में मैंने उनका ठिकाना पूछा तो उन्होंने ब्रह्माकुमारीज का पता बताया। मैंने तुरन्त पूछा, 'सर, सुना है, आप आजकल ओमशान्ति में जा रहे हैं, बाहर जाते हैं तो दही-भात खाकर काम चलाते हैं?' तब उन्होंने बड़े प्यार से मुझे कई ज्ञान की बातें समझाईं पर मैं अपने अहंकार में मस्त था। इसी बीच सेवाकेन्द्र आ गया, मैंने गेट के बाहर उन्हें उतार दिया। उन्होंने मेरा शुक्रिया किया और फिर कहा, 'अरे भाई, बातों-बातों में मैं यह तो पूछना ही भूल गया कि आजकल तुम कैसे हो?' मैंने ऐसे ही कह दिया, 'सर, हम खुश तो आत्मा भी खुश।' उन्होंने तुरन्त पूछा, 'क्या तुम आत्मा के बारे में जानते हो, नहीं तो आश्रम में थोड़ा ज्ञान सुनो।' मैंने तो मन ही मन यह निर्णय कर रखा था कि आश्रम के अंदर तो क्या गेट तक भी न जाऊँगा। पर भाई जी की बातों में एक कशिश थी इसलिए मैं न चाहते हुए भी आश्रम के अंदर चला गया।

उस दिन शराब नहीं पी

आश्रम की स्वच्छता देखकर मुझे शंका होने लगी कि ये लोग बहुत चंदा लेते होंगे तभी तो इतनी स्वच्छता है। कुछ समय बाद आश्रम की संचालिका बहन आ गई। दुर्गेश भाई ने मेरा परिचय उनसे करा दिया। फिर बहनजी ने मुझे साप्ताहिक कोर्स करने को कहा। बहनजी की बातों में इतना स्नेह और शक्ति समाई थी कि मैं मना नहीं कर सका। उसी दिन ही मेरा पहला पाठ (आत्मा के बारे में) प्रारम्भ हुआ। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि शायद जीवन में पहली बार आज ही मैंने सच्ची मन की शान्ति पाई है। ज्ञान मुझे इतना पसंद आया कि मेरे शरीर में रोमांच खड़े हो गए। उत्साह मुझ आत्मा में भरने लगा। उस दिन मैंने शराब भी नहीं पी और दोपहर की कड़ी धूप में लौकिक काम के लिए बहुत ही उत्साहपूर्वक चल पड़ा। उसी दिन के मेरे प्रोजेक्ट ने सबसे बड़ी सफलता हासिल की।

दोस्तों ने उड़ाई खिल्ली

ज्ञान सुनने की तड़पन इतनी थी कि उसी शाम को माता-पिता को लेकर फिर से आश्रम चला आया। साप्ताहिक पाठ्यक्रम खत्म होते-होते मैं सभी नशों से मुक्त हो गया। जिस दिन कोर्स खत्म होने की बात बहन जी ने कही, मुझे बहुत दुख हुआ। मैं चाहता था कि कोर्स ऐसे ही चलता रहे। फिर बहनजी ने मुरली के बारे में बताकर रोज ज्ञान-योग की क्लास करने को कहा। मैं रोज सेवाकेन्द्र में आने लगा तो ऑफिस में मेरा बदला हुआ व्यवहार देखकर सब चकित होने लगे। कई दोस्त नशा न करने की बात सुनकर मेरी खिल्ली उड़ाने लगे पर मुझे तो सच्चाई का अहसास हो गया था।

बाबा ने दिलाया अवार्ड

धीरे-धीरे जीवन परिवर्तन के साथ-साथ मेरा तनाव पूरा

ही खत्म हो गया। पिताजी की हालत सुधरने लगी और माताजी के पैर का बड़ा ऑपरेशन होना था पर वक्त पर बाबा की मदद से हल्के इलाज से ही माताजी ठीक हो गई। अब जीवन जीने का मतलब मिल गया। पहले से जीवन कई गुणा बेहतर हो गया। ऑफिस में भी मेरे जीवन परिवर्तन के बारे में चर्चा होने लगी। सबसे बड़ी बात, अज्ञानता में मैं अपने सहकर्मियों को शराब पीने को उकसाता था पर अब मुझे देखकर कइयों ने पीना कम कर दिया है और कइयों ने तो पीना ही छोड़ दिया है। फिर प्यारे बाबा ने मुझे प्रभु मिलन के प्रसाद के साथ-साथ पूरे भारतवर्ष में 'बेस्ट एम्पलोई' का नेशनल अवार्ड भी दिलाया। मेरी कम्पनी के मुख्य अधिकारी से सम्पर्क करना दूसरों के लिए नामुमकिन जैसा है पर कुशल कार्यकर्त्ता होने के कारण उनसे मेरा सीधा सम्बन्ध रहता है।

राजयोग ही बना सकता है सार्थक जीवन

आज मैं पहले से भी ज्यादा व्यस्त हूँ, समस्याएँ भी हैं पर मैं नशा नहीं करता, यह ईश्वरीय ज्ञान और योग का ही कमाल है। जिस संस्था के गेट तक न जाने की प्रतिज्ञा कभी मैंने की थी उसी संस्था ने मेरी ज़िन्दगी को नर्क से स्वर्ग बना दिया। ईश्वरीय पढ़ाई के साथ-साथ घर की जिम्मेवारियाँ, कम्पनी का कारोबार, खुद खाना बनाना – ये सारे कर्म मेरे लिए खेल बन गये हैं। कभी बचपन में मैं अपने आपसे जिन्दगी का मतलब पूछता था, जीने का ढंग ढूंढ़ता था पर आज मुझे सारे सवालों के जवाब मिल गए। सवालों से घिरे मेरे जैसे हजारों इन्सान इधर-उधर घूम रहे हैं। कई ज़िन्दगी का मतलब न समझ कर चले भी गए पर सच तो यह है कि अब स्वयं भगवान, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा हमारी जिन्दगी अपने हाथों से सजा रहे हैं, आवश्यकता है केवल अपने घमंड को छोड़ एक सकारात्मक निर्णय लेने की। केवल और केवल राजयोग ही हमारे जीवन को सार्थक सिद्ध कर सकता है। भारतवर्ष के सबसे पिछड़े जिले में भी परमात्म ज्ञान की अमृतधारा बह रही है जिसने मेरे जैसे पत्थर को भी हीरा बना दिया। मैं लाख-लाख शुक्रगुजार हूँ प्यारे बाबा का, ब्र.कु.दुर्गेश भाई जी का, निमित्त बहनजी तथा ऐसी अनोखी संस्था का जहाँ आने से जीवन दिव्य बन जाता है। मेरा यह अनुभव तनाव, परेशानी, समस्या, नशे से ग्रस्त युवकों को जीने का सही ढंग सिखा दे, इसी आशा के साथ कहना चाहूँगा –

जीते हो तुम निराशा में क्यों?
क्या कभी मतलब समझा भी है जीने का?
सोचते हो बहुत पर घमंड छोड़ो,
तो मार्ग खुल जाएगा सुख और शान्ति का।।

'पत्र' संपादक के नाम

अगस्त, 2015 के अंक में पवित्रता एवं स्नेह से युक्त भारत के प्रमुख पर्व रक्षाबंधन की आध्यात्मिक व्याख्या आत्मिक सुख देने वाली है। 'इच्छाओं पर नियंत्रण रखें' लेख प्रेरणादायक, सांसारिक इच्छाओं पर नियंत्रण कराने वाला, इच्छा मात्रम् अविद्या मंत्र से मन की गहराइयों को छूने वाला रहा। दादी जानकी जी द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर भी बुद्धि का ताला खोलने वाले प्रेरणायुक्त लगे। दादी प्रकाशमणि जी के जीवन की विशेषताएँ एवं गुण अनुकरणीय एवं मार्गदर्शक लगे। सयुंक्त सम्पादिका की कलम से निकला 'आध्यात्मिकता और भ्रांतियाँ" लेख युवाओं में फैली भ्रांतियाँ दूर करने वाला, जीवन में आने वाले विघ्नों में भगवान के साथ द्वारा सामना करने की शक्ति पैदा करने वाला एवं मनजीते जगतजीत की भावना को बढ़ाने वाला आत्मिक बलदायक है। विभिन्न आत्माओं के अनुभव ईश्वर के साथ का अनुभव एवं उमंग-उत्साह बढ़ाने वाले हैं। निमित्त आत्माओं को कोटि-कोटि धन्यवाद एवं हार्दिक आभार।

– ब्रह्माकुमार रामचन्द्र, पीलीबंगा, राजस्थान

आध्यात्मिक टीकाकरण

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

एक आध्यात्मिक परिचर्चा के दौरान यह सवाल उठाया गया कि जब विपरीत परिस्थितियाँ आती हैं तो बच्चे (विद्यार्थी) आत्महत्या कर लेते हैं, ऐसा जघन्य कृत्य वे ना करें, इसका समाधान क्या हो? खबर है कि व्यापमं घोटाले के कारण कइयों ने आत्महत्या कर ली।

जिन्दा रहने के लिए सब कुछ सहते हैं

मानव शरीर अनेक अंगों का समूह है और मानव समाज अलग-अलग विभागों, प्रभागों का समूह है। आज हम देखते हैं कि मानव के किसी भी शारीरिक अंग में अचानक कोई भयंकर बीमारी प्रकट हो जाती है जैसे कैंसर, हृदय रोग, टी.बी., अल्सर, मधुमेह आदि। अप्रत्याशित रूप से प्रकट हुई ऐसी किसी भी बीमारी को देख हम घबरा तो जाते हैं परन्तु फिर भी उसके इलाज में लगे रहते हैं। बीमारी से छूटने के लिए पैसा, समय, श्रम – हम सब कुछ खर्च करते हैं और कई बार तो कर्ज भी उठाना पड़ जाता है। कई-कई रात जागते भी गुजारनी पड़ती हैं परन्तु ये सब हम सहन करते हैं क्योंकि हम जिन्दा रहना चाहते हैं, हमें अपने शरीर से प्रेम है।

मन के स्तर पर उत्पन्न बीमारियाँ

जैसे तमोगुणी वातावरण, पर्यावरण प्रदूषण, अस्वच्छ खाद्य आदि के कारण नई-नई बीमारियाँ प्रकट होती रहती हैं इसी प्रकार अस्वच्छ विचार, स्वार्थ के विचार, लालच और तृष्णा के विचार, आसक्ति, इच्छाएँ और संग्रहवृत्ति – इनके कारण समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी घोटाले, धांधली, बेईमानी, धोखाधड़ी, अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि की घटनाएँ घटती रहती हैं। ये कड़ी बीमारियाँ मन के स्तर पर पैदा होती हैं। जब ये शिक्षा के क्षेत्र में उभरती हैं तो विद्यार्थी इनके शिकार हो जाते हैं, स्वास्थ्य के क्षेत्र में उभरती हैं तो मरीज इनके शिकार हो जाते हैं, व्यापार के क्षेत्र में उभरती हैं तो ग्राहक शिकार हो जाते हैं। अन्य अलग-अलग क्षेत्रों में उभरने पर उनसे सम्बन्धित लोग शिकार होते हैं।

कौन-सा टीकाकरण किया?

रोगों और घोटालों से भरे इस समाज के बीच आज के हर बच्चे का जन्म होता है। हम रोगों से बचाने के लिए जन्म के साथ ही टीकाकरण कराते हैं। पोलियो से बचाव का टीका, निमोनिया से बचाव का टीका....और भी न जाने कितनी तरह के टीके बच्चे को लगवाते हैं परन्तु घोटालों और धांधलियों के कारण मन को बीमार होने से बचाने के लिए हमने कौन-सा टीकाकरण किया? ध्यान रहे, शरीर की हत्या से पहले विवेक की हत्या होती है, मनोबल की हत्या होती है, जीवन जीने के उमंग और तमन्ना की हत्या होती है, यह हत्या ना हो इसके लिए शारीरिक टीकाकरण के साथ-साथ आध्यात्मिक और नैतिक टीकाकरण भी जरूर चाहिए।

जीवन पहले, मनचाही सफलता बाद में

आध्यात्मिक टीकाकरण का अर्थ है हम बाल्यकाल से बच्चे में विपरीत परिस्थितियों के होते भी जीने और जीतने का जज़्बा भरें। जीवन भी एक यात्रा है, इस यात्रा पर उतरने वाले बड़े होते अपने बच्चे को हर माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक ये जरूर समझाएँ कि इस स्पर्धा के जमाने में पूरा जोर लगाने पर भी यदि मनचाही सफलता दूर नजर आए तो जीवन पहले है, चाही गई सफलता बाद में है। जीवन रहेगा तो सफलता आज नहीं तो कल, मिलेगी ही। जीवन ही चला गया तो सफलता तो कभी भी नहीं आएगी, अगले जन्म में भी नहीं। जीवन रूपी धरती पर उगा हुआ फूल है सफलता। धरती को ही नष्ट कर दिया तो फूल कहाँ उगेगा। जीवन को नष्ट करने का एवजा चुकाने में ही कई जन्मों का समय लग जाएगा।

जरूरी है सम्भावित परिस्थितियों की तैयारी

कोई कह सकता है कि बच्चों का मन बड़ा कोमल होता है, उनके आगे समाज के काले पहलुओं की चर्चा करने से वे डर जाएंगे, मायूस हो जाएंगे। हमें ध्यान में रहे, डराने और सावधान करने में अन्तर होता है। जब बच्चा गाड़ी लेकर कोई यात्रा शुरू करने जा रहा होता है तो अभिभावक अक्सर सावधानी देते हैं, बेटा अमुक सड़क एकदम टूटी पड़ी है, वहाँ गाड़ी धीरे चलाना और बेटा स्टेपनी रखी है ना, एक बार चेक कर लो। क्या हम बच्चे को डरा रहे हैं, क्या हम गलत सोच रहे हैं कि टायर पंक्चर होगा ही और स्टेपनी की जरूरत पड़ेगी ही, नहीं, हम सावधान कर रहे हैं कि सम्भावित परिस्थितियों की तैयारी करके चलना होता है। जीवन में भी एक स्टेपनी चाहिए अर्थात् एक मार्ग के अवरूद्ध होने पर दूसरे मार्ग की जानकारी और पहचान बनाकर रखनी जरूरी है। एक टायर पंक्चर हो गया तो क्या हम उसके लिए बैठकर शोक मनाएँ कि ऐसा हुआ क्यों, नहीं। हमारे पास दूसरा तैयार है ना, उसे प्रयोग करेंगे। इसी प्रकार हमारी सामाजिक व्यवस्थाओं में यदि कहीं पंक्चर हो जाता है तो हम दूसरा रास्ता तैयार करने का मनोबल रखें। समझदार माता-पिता अपने बच्चे को यह भी समझा देते हैं कि यदि कोई समाज विरोधी तत्व लूटने या गाड़ी छीनने का प्रयास करे तो हर हाल में अपने जीवन की रक्षा करना। जीवन पहले है, गाड़ी बाद में है। इसी प्रकार हम यह भी सिखाएँ कि जीवन पहले है, पढ़ाई, डिग्री, नौकरी बाद में। व्यवस्था की किसी कमी के कारण हमारी पढ़ाई, डिग्री, नौकरी में व्यवधान पैदा हुआ, तो हमने अपनी सांसों के आने-जाने में भी व्यवधान पैदा कर दिया। एक छोटी चीज़ किसी ने छीनी और एक बड़ी अमूल्य चीज हमने छीन ली, नष्ट कर दी। इस स्थिति में व्यवस्था का दोष छोटा और हमारा बड़ा हो गया। उन्होंने तो छोटा नुकसान किया पर हमने कभी पूरा न होने वाला बड़ा नुकसान कर लिया।

जो वश में नहीं उसका गम करने से क्या फायदा

क्या हमारे आत्महत्या करने से व्यवस्थाएँ सुधर जाएंगी। व्यवस्था को बिगाड़ने वाले क्या इससे पसीजेंगे? कदापि नहीं। हम मर कर किसी को क्या सन्देश देना चाहते हैं? हाँ, हम विपरीत परिस्थिति में भी जीकर, अपनी राहें मोड़कर भी सफल होकर दिखाते तो कइयों को सन्देश मिल जाता। एक बार एक स्कूल में बोर्ड की परीक्षा के दौरान जाँचकर्त्ताओं को दो बच्चे नकल करते मिल गए जिस कारण पूरी कक्षा का परीक्षा परिणाम रोक दिया गया। दो दोषी बच्चों के कारण कई निर्दोष बच्चे भी चपेट में आकर अपना हक नहीं पा सके। दो वर्ष तक वे यूँ ही घूमते रहे। फिर सबने अपने-अपने कार्य शुरू कर दिए, किसी ने ड्राइविंग सीखी, किसी ने व्यापार शुरू किया और किसी ने खेती। आज वे अपने-अपने क्षेत्र में सुखी हैं, सफल हैं। मैंने उनमें से एक से पूछा, परीक्षा परिणाम न मिलने का गम नहीं है क्या? उसका उत्तर था, जो हमारे वश में ही नहीं उसका गम करने से क्या फायदा? हमारे वश में जो है, वो हम कर रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं, सन्तुष्ट भी हैं।

हर ओर बढ़ना आना चाहिए

आप जिस ओर जा रहे हैं वह ही एक मात्र दिशा नहीं है, आपके दाएँ भी एक दिशा है, बाएँ भी एक दिशा है, पीछे भी है, ऊपर और नीचे भी है। कुल 10 दिशाओं में से एक अवरुद्ध हो भी गई तो क्या हुआ, बाकी 9 के मार्ग तो खुले हैं, उधर बढ़िए, मंज़िल उधर से भी सामने आ जाएगी। यदि हमें केवल सामने ही बढ़ना आता है तो यह हमारे द्वारा अपने पर लगाई गई हद है। हमें हर ओर बढ़ना आना चाहिए। जितना अपने को हदों से बाहर निकालेंगे, उतने अधिक मार्ग खुलते जाएंगे।

क्या घोटालों का बीज नष्ट हुआ ?

घपलों और घोटालों के दोषियों को हम पकड़ते हैं, जेल भेजते हैं और सुकून पा लेने का भ्रम मन में पालते हैं पर क्या हमने घोटालों का बीज नष्ट किया? कड़वी मिर्च को धो

डालो, पोंछ डालो, रगड़ डालो या अन्धेरी कोठरी में बन्द कर डालो, क्या उसका कड़वापन चला जाएगा? नहीं। कड़वापन उसके बीज में छिपा एक तत्व विशेष है। जब तक बीज पर रासायनिक क्रिया करके उस तत्व का उन्मूलन ना किया जाए, तब तक कड़वी मिर्चें पैदा होती रहेंगी। घपलों-घोटालों का बीज लालच भी सम्बन्धित व्यक्ति की आत्मा में है। जब तक आध्यात्मिक क्रिया द्वारा लालच के उस बीज का आत्मा में से उन्मूलन न किया जाए तब तक वह व्यक्ति लालच से उभरने वाले दोषों से मुक्त कैसे होगा? ऐसे दोषों से मुक्त करने वाली आध्यात्मिक क्रिया का नाम है राजयोग का अभ्यास।

राजयोग भारत की प्राचीन विद्या है। परमात्मा शिव योगेश्वर हैं, वे ही धर्म-ग्लानि के समय धरती पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से मानव मात्र को योग की शिक्षा दे रहे हैं। राजयोग के अभ्यास में हम अपने मूल आत्मिक स्वरूप की स्मृति में टिककर, सर्व गुणों और मूल्यों के स्रोत पिता परमात्मा के साथ मन और बुद्धि का कनेक्शन जोड़ते हैं। इस कनेक्शन के माध्यम से परमप्रिय परमात्मा शिव के सर्व गुणों और शक्तियों की किरणें आत्मा में प्रवेश होने लगती हैं। आत्मा के भीतर के प्रदूषित संस्कार इस क्रिया से जल जाते हैं। जैसे जला हुआ, भुना हुआ बीज उग नहीं सकता, इसी प्रकार राजयोग द्वारा जला दिए गए प्रदूषित संस्कार फिर कभी कर्म में प्रकट नहीं होते। अत: हर माता-पिता से अनुरोध है कि वे अपने बच्चों का आध्यात्मिक टीकाकरण कराएँ और सरकार से अनुरोध है कि वो अपने अधिकारियों का आध्यात्मिक टीकाकरण कराएँ ताकि समाज घपलों, घोटालों और उनसे उपजी मायूसी, निराशा, हताशा, खुदकुशी आदि से मुक्ति पा सके। ❖

खुदा बन गए मेरे दोस्त

ब्रह्माकुमार सत्यम, कक्षा चौथी, रादौर (हरियाणा)

आपको पता है मुझे खुदा दोस्त कैसे मिला। मैं मात्र ढाई वर्ष का था। मम्मा के साथ रोज़ मन्दिर जाता था। वहाँ ढेर सारी मूर्तियाँ थीं। मैं अक्सर मम्मा से पूछता था, ये सब कौन हैं? मम्मा कहती थी, भगवान हैं। एक दिन स्कूल में नैतिक शिक्षा की किताब में आया कि भगवान एक हैं, वे हमारे पिता हैं, वे सब जगह हैं। अब मैं उलझन में था कि भगवान एक हैं या बहुत सारे। दूसरा, वो मेरे पिता हैं तो मुझसे मिलने क्यों नहीं आते, वे सब जगह हैं तो मुझे दिखाई क्यों नहीं देते। मैं सबसे पूछता था पर कोई भी मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पा रहा था। मेरे अन्दर भगवान से मिलने की तड़प थी। फिर अचानक एक दिन मैं एक अद्‌भुत स्कूल 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में पहुँच गया जहाँ मुझे पता चला कि जब भगवान स्वयं धरा पर अवतरित होते हैं तभी आकर अपना परिचय देते हैं कि वो कौन हैं, कहाँ रहते हैं, कैसे दिखाई देते हैं, इसलिए उन्हें खुदा कहते हैं। उनके सिवाय उनका परिचय कोई नहीं दे सकता। तब से मुझे मेरे खुदा दोस्त मिल गए। मैं उन्हें नहीं ढूंढ़ पाया पर उन्होंने मुझे ढूंढ़ लिया।

वे सचमुच इस धरा पर आ गए हैं। यकीन नहीं होता पर क्यों? भगवान ने तो वायदा किया हुआ है ना – जब-जब धर्म की ग्लानि होगी तब-तब मैं धरती पर आऊँगा। क्या ये वो समय नहीं चल रहा? क्या अभी भी कसर है धर्म की ग्लानि होने में? भगवान अपना वायदा तोड़ दें, यह तो हो ही नहीं सकता। वो सचमुच इस धरा पर आ चुके हैं इस कलियुगी रात्रि को सतयुगी स्वर्ग बनाने के लिए। एक पल के लिए अपनी आँखें बन्द कीजिए और अपने दिल पर हाथ रखिए, क्या हम सभी उस परमपिता परमात्मा को नहीं पुकार रहे – हे दुखहर्त्ता, सुखकर्त्ता आओ और हमें ऐसी दुनिया में लेकर जाओ जहाँ कोई दुख न हो। बच्चे तड़प रहे हों, बुला रहे हों और पिता ना आए, क्या ऐसा हो सकता है? नहीं ना। वो सचमुच आ चुके हैं। अगर आप भी उनसे मिलना चाहते हैं तो अपने नज़दीकी 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में जाकर तो देखिए। यकीन रखिए, निराश नहीं होंगे। शुक्रिया खुदा दोस्त मुझे अपना बनाने के लिए, शुक्रिया....! ❖

विजयदशमी पर विशेष ...

रावण मर गया या जिन्दा है ? क्या उसके दस सिर थे ?

भारत के त्योहारों में से कुछेक तो किसी-न-किसी देवता के नाम से सम्बन्धित हैं और कुछेक परमपिता परमात्मा के नाम से जुड़े हुए हैं। 'दशहरे' या 'विजयदशमी' का त्योहार किसी विशेष व्यक्ति के नाम से नहीं जुड़ा हुआ है बल्कि इस नाम में 'दस' शब्द पर ही विशेष बल दिया गया है। प्राय: लोग यह समझते हैं कि रावण दस सिरों वाला था और उसके हारने (मरने) के कारण इस त्योहार का नाम 'दशहरा' रखा गया है।

क्या रावण के दस सिर थे ?

अगर हम एक शरीर पर दस सिर मान लें तो प्रश्न उठेगा कि वे किस क्रम में ठहरे होंगे? आपने देखा होगा कि रामलीला में रावण का जो बुत जलाने के लिए रखा जाता है उसमें कभी बीच के सिर की बायीं ओर चार सिर और दायीं ओर पाँच और कभी बायीं ओर पाँच और दायीं ओर चार सिर बने होते हैं। यदि रावण के दस सिर होते तो वाल्मीकि जी ने या तुलसी जी ने यह तो लिखा होता कि दस सिर किस क्रम से थे? इसके अतिरिक्त, आप विचार कीजिए कि यदि रावण के दस सिर थे तो वह सोता कैसे होगा, खाता किस मुख से होगा, बोलता किस मुख से होगा? उसका मस्तिष्क कैसे काम करता होगा और उसकी आत्मा किस भृकुटि में निवास करती होगी? बीस भुजाओं और दस सिरों वाला कोई विशालकाय व्यक्ति कैसा अजीब लगता होगा!! उसने जन्म ही कैसे लिया होगा!!!

निष्पक्ष भाव से विचार करने पर आप मानेंगे कि दस सिर वाला तो कोई मनुष्य हो ही नहीं सकता। अत: जैसे 'दशरथ' शब्द का अर्थ दस रथों वाला लेना उचित नहीं है, वैसे ही 'दशग्रीव', 'दशानन' आदि शब्दों से यह समझना कि रावण कोई दस सिर वाला मनुष्य था, विवेक-संगत नहीं है।

जो रुलाता है वही रावण है

तब प्रश्न उठता है कि रावण के दस सिर दिखाने के पीछे क्या रहस्य है? इसका उत्तर समझने से पहले 'रावण' शब्द के अर्थ को जानना आवश्यक है। 'रावण' शब्द की व्याख्या करते हुए वाल्मीकि ने स्वयं लिखा है ''रावणो लोकरावण:'' अर्थात् लोक को रुलाने वाले को रावण कहा जाता है। 'रावयति' अर्थात् जो रुलाता है वह 'रावण' है। जैसे व्याख्याकार 'दशरथ' की व्याख्या में कहते हैं कि जिसके रथ सभी दिशाओं में पहुँचते हों अर्थात् जो चक्रवर्ती राजा हो वही दशरथ है, वैसे ही 'दशग्रीव' का अर्थ करते हुए यह कहा जा सकता है कि रुलाने वाली शक्ति (माया) जिसका प्रभाव दसों दिशाओं में है, वही रावण है। इस प्रकार, 'रावण' शब्द का विपरीतार्थक शब्द 'राम' नाम 'रमणीय' अर्थात् हर्षाने वाली शक्ति (परमात्मा) का वाचक है और 'दशहरा' का अर्थ है परमात्मा द्वारा दसों दिशाओं में व्यापक माया का अपहरण अथवा उपसंहार। परमपिता परमात्मा जब माया-मुक्त करते हैं तो किन्हीं दो-चार नर-नारियों को माया के पंजे से नहीं छुड़ाते बल्कि वे सारे संसार को माया के प्रभाव से उबारते हैं, इसी भाव को स्पष्ट करने के लिए इस त्योहार का नाम रखा गया है 'दशहरा'।

रुलाते हैं पाँच विकार

जब माया दसों-दिशाओं में अपना प्रभाव डाले हुए होती है, जब जल, वायु, अग्नि, नर-नारी, पशु-पक्षी सभी माया की जंजीरों में बन्धे होते हैं तब निराकार परमपिता परमात्मा, जिन्हें 'राम' कहा गया है, इस सृष्टि में अवतार लेकर मनुष्यों को माया के साम्राज्य से मुक्ति दिलाते हैं। मुख को मन का दर्पण भी कहते हैं (Face is the index of mind)। मनुष्य के मन के जो विकार हैं, वे मुख के रूप में दिखाये जाते हैं। अतः पाँच विकार पुरुष के मन में और पाँच विकार स्त्री के मन में होने के कारण, इनका युगल रूप रावण (माया का बुत) दस मुखों वाला बनाया जाता है। पाँच विकार ही मनुष्य को रुलाते हैं। इसके अतिरिक्त, रावण को 'असुर' अथवा 'असुरेन्द्र' भी कहा जाता है और निश्चय ही असुर किसी भिन्न जाति का नाम नहीं है बल्कि जिस मनुष्य के मन में पाँच विकार हैं, वह आसुरी सम्पत्ति वाला मनुष्य ही असुर है। इन विकारों को जीतने के लिए ईश्वरीय शक्ति चाहिए इसलिए विजयदशमी से पहले नवरात्रि के दिनों में 'शक्ति' का आह्वान किया जाता है और विजयदशमी के बाद अर्थात् ईश्वरीय शक्ति द्वारा रावण का हरण होने के बाद जब आत्मा का दीपक जग जाता है तो उसकी खुशी में दीवाली का त्योहार मनाया जाता है।

कुम्भकर्ण और मेघनाथ को जलाने का कारण

काम, क्रोधादि विकारों के अतिरिक्त आलस्य भी एक विकार है। कुम्भकरण आलस्य का प्रतीक है। प्रसिद्ध है कि कुम्भकरण छः महीने सोया रहता था। अब वास्तव में लगातार छः मास तो कोई भी नहीं सो सकता, मनुष्य को शारीरिक क्रियाएँ करनी होती हैं और वैसे भी छह महीने लम्बी तान कर सोये रहना तो असम्भव ही है। 'छह महीने सोये रहना' एक मुहावरा है जो कि मनुष्य के आलस्य का सूचक है। अतः रावण के बुत के साथ कुम्भकर्ण का (आलस्य का) बुत भी जलाया जाता है। कुम्भकर्ण, समझने योग्य बातों को न समझने वाले का भी प्रतीक है। 'कुम्भ' का अर्थ घड़ा और कर्ण का अर्थ कान है। यदि घड़े के मुख में आप कुछ कहें तो आवाज तो घड़े के अन्दर जायेगी परन्तु बुद्धि न होने के कारण घड़ा उसको समझेगा नहीं और जड़ होने के कारण आपके आदेश का पालन भी नहीं करेगा। तो जो व्यक्ति ईश्वरीय ज्ञान को सुनते हुए भी नहीं समझता, निद्रा तथा आलस्य में पड़ा रहता है और न ईश्वरीय सन्देश पर ध्यान देता है और न ही अपनी जड़ता (सुस्ती) के कारण ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है, वह 'कुम्भकर्ण' है।

इसी प्रकार मेघनाथ वह है जो बादलों की तरह गरजता है। कहते हैं, जो मेघ गरजते हैं वे बरसते नहीं हैं। तो जो मनुष्य दूसरों को भयभीत करने वाली वाणी बोलते हैं, निरर्थक वचन कहते हैं अथवा कुछ कहते तो हैं परन्तु करते कुछ नहीं वो 'मेघनाद' ही हैं। वे भी विकारी मनुष्य ही हैं। अतः मेघनाथ व्यर्थ एवं दुखदायक शब्द बोलने वाले लोगों का प्रतीक है। जैसे रावण (पाँच विकार) रुलाने वाला है, वैसे ही मेघनाथ भी रुलाने वाला है और कुम्भकर्ण भी आसुरी स्वभाव वाला है। पाँच विकारों के साथ आलस्य और व्यर्थ वचन भी जलाने योग्य हैं इसलिए रावण के साथ कुम्भकर्ण और मेघनाथ के बुत भी जलाए जाते हैं।

रावण द्वारा 'सीता-अपहरण'

वास्तव में, ज्ञानी मनुष्यात्मा ही सीता है। जब वह अपने मन को लक्ष्य की रेखा से बाहर निकाल देती है तो माया रूपी रावण छल करके उसका अपहरण कर लेता है और उसे अपने चंगुल में रखता है। तब निराकार परमात्मा, जो ही वास्तव में राम हैं, उसे रावण की कैद से छुड़ाते हैं। चारों ओर जल से घिरा हुआ यह भूमण्डल ही एक महाद्वीप है जिसे लंका की उपमा दी गई है। जब इस पृथ्वी रूपी लंका पर माया का प्रभाव हो जाता है तो परमपिता परमात्मा इस काँटों के जंगल रूपी संसार में आते हैं और फिर लंका दहन करके अर्थात् सृष्टि का महापरिवर्तन कराके हर-एक मनुष्यात्मा रूपी सीता को छुड़ाते हैं और भारत में रामराज्य

की पुन: स्थापना करते हैं।

रावण अभी जिन्दा है

ऊपर 'राम' और 'रावण' के कथानक का जो आध्यात्मिक रहस्य बताया गया है, उससे स्पष्ट है कि वर्तमान समय रावण ही का सारे भूमण्डल पर साम्राज्य है। अब सभी मनुष्यात्माएँ विकारों रूपी रावण के वश में हैं। जल, थल, अग्नि, वायु सभी विकारों के प्रभाव के कारण तमोप्रधान और निस्सार हो चुके हैं। अत: सिद्ध है कि रावण अभी मरा नहीं है बल्कि जिन्दा है। लोग हर वर्ष लाखों रुपये खर्च करके नगर-नगर में रावण का कागजी बुत बनाकर तो जलाते हैं परन्तु वे यह नहीं समझते कि रावण तो हर व्यक्ति के मन में, हर देश के कोने-कोने में घुस-पैठ कर चुका है और सभी को किसी-न-किसी तरह रुला रहा है अर्थात् अशान्त किये हुए है।

निराकार परमात्मा शिव (राम) का कर्त्तव्य

वास्तव में शिव, जिन्हें रामेश्वर कहा गया है, जिनकी प्रतिमा रामेश्वरम् में है, जिनसे राम ने शक्ति प्राप्त की थी, सर्वशक्तिमान हैं और मनुष्यात्माओं को रावण अर्थात् माया के बन्धन से मुक्त कराते हैं। अब जबकि मनुष्यात्माएँ रूपी सीताएँ माया के बन्दीगृह के बन्दी बने हुए हैं और दुख में अर्थात् शोक वाटिका में हैं – तो परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर, मनुष्यात्माओं को ऐसा सहज ज्ञान और राजयोग सिखा रहे हैं जिस द्वारा ही वे सच्चे अर्थों में विजयदशमी मना सकते हैं अर्थात् पाँच-पाँच विकारों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अत: हमें चाहिए कि हम ज्ञान-बाणों से रावण को मारकर, सहज राजयोग की सूक्ष्माग्नि में उसे जला डालें। रावण को जलाकर खत्म करने का यही एक तरीका है। वर्तमान समय रामायण-प्रसिद्ध वृत्तान्त की पुनरावृत्ति हो रही है। जो मनुष्य परमपिता परमात्मा के 'पवित्र बनो और योगी बनो' – इस सन्देश को नहीं सुनेंगे और अज्ञान-निद्रा में सोये रहेंगे वे स्वयं सोच लें कि वे कौन कहलायेंगे। ❖

अन्नामलाई विश्वविद्यालय

के तकनीकी सहयोग से संचालित पाठ्यक्रम

ब्रह्माकुमारीज़, शिक्षा प्रभाग (R.E.R.F)

मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म

डिप्लोमा	बी.एससी.	स्नातकोत्तर डिप्लोमा	एम.एससी.	पी.जी. डिप्लोमा इन काउण्सिलिंग	Self Management & Crisis Management एम.बी.ए.
हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / गुजराती	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / मलयालम / तेलगू / मराठी / गुजराती / नेपाली	हिन्दी / अंग्रेजी / तमिल / कन्नड़ / उड़िया / गुजराती	अंग्रेजी	अंग्रेजी
+ 2 अथवा समकक्ष	+ 2 अथवा समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष	डिग्री या समकक्ष
एक वर्ष	तीन वर्ष	एक वर्ष	दो वर्ष	एक वर्ष	दो वर्ष

पाठ्यक्रम **नियमावली और आवेदन फार्म** ब्रह्माकुमारीज़ के किसी भी पी.सी.पी. केन्द्र अथवा शान्तिवन स्थित निदेशक कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। (1) फार्म शुल्क - 100 रु. (एम.बी.ए. के लिए 250 रु.) (2) पोस्ट के द्वारा 150 रु. फार्म प्राप्त करने के लिए 094422-68660 पर सम्पर्क करें। **वार्षिक परीक्षा प्रत्येक वर्ष 19 मई से प्रारम्भ होगी।**

AU Nodal Office

ब्रह्माकुमारीज़, विश्व शान्ति भवन
36, मिनाक्षी नगर, P&T नगर के पीछे
मदुराई - 625 017 (तमिलनाडु)
:09414152522 / 09414153090
Email:valueeducationmadurai@gmail.com
Website: www.bkvalueeducation.in

प्रवेश प्रारम्भ: प्रवेश की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2015

अन्तर्राष्ट्रीय
वृद्ध दिवस
पर विशेष...

वृद्धावस्था अभिशाप नहीं, वरदान है

ब्रह्माकुमार रामप्रताप सैनी, सीरी, पिलानी (राजस्थान)

बचपन की अवस्था बहुत निर्मल व पवित्र होती है। न आगे की चिंता न पीछे की चिंता, न कोई छल-कपट, न कोई फरेब। तभी तो उससे हर कोई प्यार करता है। बचपन से तरुणावस्था में आते-आते शारीरिक बदलाव आते हैं। तरुणावस्था से जवानी की ओर बढ़ने पर शारीरिक बदलाव तेजी से होते हैं। इस अवस्था में विद्याध्ययन के साथ-साथ मायावी आकर्षणों में व्यक्ति फँसने लगता है और इनके वशीभूत होकर विकर्म करने लगता है। यह कैसी विडम्बना है कि जिन विकर्मों से बचने के लिये ज्ञान की जीवन-यात्रा में सबसे ज्यादा ज़रूरत है वह स्कूल या कॉलेज में किसी भी स्तर पर नहीं पढ़ाया जाता है। विद्याध्ययन के पश्चात् शादी कर उसे दुनियादारी के समुद्र में फेंक दिया जाता है जिसमें तैरने के बारे में शिक्षा के दौरान कुछ नहीं बताया गया। वह बीवी-बच्चों तथा देह के सम्बन्धियों में ही उलझ जाता है। वह न तो अपने बारे में जानता है तथा न ही परमात्मा के बारे में जानता है। प्रौढ़ावस्था में उस पर और ज्यादा जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं। बच्चों को पढ़ाने-लिखाने की तथा उनकी शादी की फिकर में सब कुछ भूल कर जमापूँजी भी खर्च कर देता है। चूँकि वह खुद के ज्ञान को, परमात्मा के ज्ञान को और अच्छे कर्मों के ज्ञान को नहीं जानता इसलिए अपने बच्चों को भी अच्छे कर्म करने के संस्कार नहीं दे पाता है।

सीख ले लेनी चाहिए दूसरों को देखकर

अब उसके कदम वृद्धावस्था की ओर बढ़ने लगते हैं। शरीर कमजोर होने लगता है, बीमारियाँ भी आने लगती हैं। बच्चे भी उपेक्षा करने लगते हैं। पत्नी का भी बच्चों की तरफ झुकाव हो जाता है। उसके हाथ से सब कुछ छिन जाता है। जिनके लिए सारी जिंदगी कमाता रहा वे सब उसकी इस तरह उपेक्षा करेंगे, यह सोच-सोच कर वह अपने को ठगा हुआ महसूस करता है और अपने आप को दुनिया का सबसे दुखी इंसान समझने लगता है। 'लुट गया, लुट गया' यह सोचते हुए उसका जीवन नर्क हो जाता है और जैसे-तैसे जीवन-यात्रा पूरी कर इस संसार को छोड़ता है। इसलिए ही वृद्धावस्था अभिशाप के समान लगती है। यह कोई एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। बहुतेरे लोगों के साथ ऐसा होता है। इस कहानी से हमें कुछ सीख लेनी चाहिए जिससे वृद्धावस्था हमें अभिशाप न लगकर वरदान लगने लगे।

वृद्धावस्था के आगमन से पूर्व करें उसकी तैयारी

किसी ने बहुत अच्छा कहा है,

'मौत, बुढ़ापा, आपदा सब काहू को होय,
ज्ञानी काटे ज्ञान से मूर्ख काटे रोय।'

हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि मौत सबको आनी है। बुढ़ापा भी सबको आना है तथा समस्यायें भी सबके जीवन में आती हैं। अत: इनके लिए मूर्ख व्यक्ति की तरह हाय-हाय करने की बजाय हमें इनके आगमन की तैयारी करनी चाहिए। जैसे हम अपने बच्चों की शादियों के लिए पहले से तैयारी करते हैं उसी तरह से हमें वृद्धावस्था के

आगमन से पूर्व ही इसकी तैयारी करनी चाहिए। मौत के बारे में हमें कुछ भी नहीं पता है कि वह कैसे तथा कब आएगी परंतु यह पता है कि आएगी जरूर। मौत सभी को आती है, यह निश्चित है। जो जन्मता है वह मरता जरूर है, यह अन्तिम सत्य है। यह बात सदा याद रखेंगे तो मौत का डर नहीं रहेगा।

प्रकृति व परमात्मा के समीप आएँ

बुढ़ापा भी सबको आता है। जीवन-यात्रा में कई पड़ावों से गुजरने के बाद अंत में यह आता है। यह कोई रोग या अभिशाप नहीं है, कलिकाल में शरीर की स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसमे रोने-धोने की कोई बात नहीं है। बुढ़ापे में दुख व बीमारियाँ – कुछ तो वातावरण और कुछ कर्मों के फलस्वरूप आती हैं। इनसे घबराएँ नहीं। बुढ़ापे में कष्ट कम हों, इसके लिए पहले से तैयारी करनी होगी। चालीस वर्ष की आयु के आसपास हमें स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान देने लग जाना चाहिए। कच्चा खाना ज्यादा, पक्का खाना कम। कच्चा खाना जल्दी पचता है और पौष्टिक भी होता है। सभी तरह के नशों से दूरी बना लेनी चाहिए। घर के हल्के-फुल्के काम करना तथा समाज सेवा के कुछ कार्य करना, अपनी दिनचर्या में शामिल कर लेना चाहिए। जितना हो सके प्रकृति व परमात्मा के समीप आते जाना चाहिए। जितना प्रकृति के पास रहेंगे उतना स्वस्थ रहेंगे और जितना परमात्मा के समीप आएंगे उतना विकर्म करने से बचते जाएंगे, इससे जीवन में आनंद, शांति और पवित्रता आएगी। जहाँ ये सब गुण रहते हैं वहाँ हाय-हाय नहीं रहती।

जैसा करेंगे, वैसा ही लौटकर आएगा

हम देखते हैं कि समस्याएँ सभी के जीवन में आती हैं, चाहे वे किसी भी तरह की हों। ये क्यों आती हैं, इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें कर्मों की गहन गति को जानना होगा। ये सब हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों तथा इस जन्म के कर्मों के फलस्वरूप आती हैं। अच्छे कर्मों के अच्छे फल से और बुरे कर्मों के बुरे फल से कोई छूट नहीं सकता है। जैसा हम करेंगे, वैसा ही लौटकर आएगा। लौटकर क्या आए, यह हमारे ही हाथ में है। कई सोचते हैं, ये सब भगवान की मर्जी से हो रहा है परंतु नहीं, परमात्मा हमारे पिता हैं और कोई भी पिता अपने बच्चों को दुख नहीं देता है।

सलाहकार व संरक्षक की भूमिका निभाएँ

मनुष्य खाली हाथ इस संसार में आता है तथा खाली हाथ जाता है। जब सब कुछ यहीं छोड़ना पड़ता है तो क्यों न हम इसकी भी तैयारी कर लें। इससे पहले कि बच्चे व पत्नी हमारी उपेक्षा करनी शुरू करें, हमें ही उनसे मोह त्याग देना चाहिए। घर में जो दादागिरी जमा रखी है कि घर के सब लोग मेरी मर्जी से चलें, इसे अब छोड़ दें। इस विश्वास के साथ कि जो भी होगा, अच्छा ही होगा, सब कुछ उनको सौंप कर, मन से न्यारे हो जाएँ। उनको कह दें, अब यह घर तुम संभालो। अब आप एक सलाहकार व संरक्षक की भूमिका निभाएँ और अपना पूरा ध्यान परमात्मा की ओर मोड़ दें। जब आप ऐसा करने लग जाएंगे तो एक तो आपको परमात्मा का प्यार मिलने लग जाएगा जिससे जीवन में शान्ति हो जाएगी तथा दूसरी तरफ आपके बच्चे व पत्नी भी आपकी उपेक्षा न कर आपको आदर की दृष्टि से देखेंगे क्योंकि अब आप उनकी जिंदगी में दखल नहीं दे रहे हैं। अब वे अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीएंगे।

जाना है अगली यात्रा पर

परमपिता परमात्मा ने बताया है कि हमें इस दुनिया में निमित्त-भाव से रहना है। सभी कर्त्तव्य अच्छी तरह से पूरे करने हैं परंतु यह समझकर करने हैं कि बाबा (परमात्मा) ने ही ये काम करने के लिए मुझे धरती पर भेजा है। ज्योंहि मेरा काम पूरा हो जाएगा, मुझे अगली यात्रा पर जाना होगा। यहाँ मोह में फँसना नहीं है। इस तरह से आप बंधनों से मुक्त होकर हल्के हो जाएंगे और परमात्मा की याद तथा सेवा के लिए और अधिक समय निकाल पाएंगे जिससे यह अवस्था वरदान लगने लग जाएगी। ❖

विपत्तियों को सहने का बल केवल ईश्वर की याद से ही मिलता है

कर्मठ बनें, कर्महीन नहीं

सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली

आकाश में घने बादल छाए हुए थे। रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं। ऐसे में जंगल में एक मोर आनंदित होकर नृत्य कर रहा था। उसके खूबसूरत पंख इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहे थे। अनाज से भरा थैला लिए हुए वहाँ से गुज़रने वाला एक व्यक्ति रुक कर यह सुंदर दृश्य देखने लगा। अचानक मोर की नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी तो पूछ लिया, तुम कहाँ जा रहे हो और तुम्हारे हाथ में यह क्या है? व्यक्ति ने कहा कि मैं बाज़ार जा रहा हूँ, इस थैले में अनाज भरा हुआ है जिसे बेचकर एक सुंदर-सा पंख खरीद कर लाऊँगा और अपना घर सजाऊँगा। मोर बोला, ''मुझे खाने की तलाश में दिनभर इधर-उधर भटकना पड़ता है। यदि तुम मुझे अनाज दे दो तो मैं तुम्हें अपना खूबसूरत पंख दे दूँगा।'' व्यक्ति को यह सौदा पसंद आया। उसने अनाज मोर को दे दिया और पंख लेकर खुशी-खुशी अपने घर चला गया।

अब तो वह व्यक्ति रोज़-रोज़ ही अनाज लेकर मोर के पास आता और बदले में पंख लेकर खुशी-खुशी अपने घर चला जाता। मोर भी बहुत खुश रहने लगा। अब उसे खाने की तलाश में इधर-उधर नहीं भटकना पड़ता था। दिनभर चोंच से अनाज के दाने चुगता रहता और आराम से पड़ा रहता। धीरे-धीरे उसके पंख कम होने लगे और एक दिन वो भी आया जब सारे पंख समाप्त हो गए। पंख ही नहीं रहे तो उस व्यक्ति ने अनाज लेकर आना भी छोड़ दिया। मोर के पास रखा हुआ सारा अनाज भी समाप्त हो गया। मोर को भूख लगी तो उसने फैसला किया कि उड़कर दाना-दुनका जुटाता हूँ। उसने उड़ने का प्रयास किया लेकिन उड़ ही नहीं पा रहा था। उड़े भी तो कैसे? उसके पास एक भी पंख नहीं बचा था। उसने अपने शरीर पर एक नज़र डाली तो पाया कि पंखों के बिना वह कितना बदसूरत लग रहा है। एक ही जगह पड़े-पड़े और आराम से सारे दिन खाते रहने की वजह से उसका शरीर भी भारी और थुलथुल हो गया था।

घर बैठे मिलते दानों के लालच में मोर ने अपनी सुंदरता ही नहीं, अपनी उड़ने की क्षमता को भी बेच दिया था और साथ ही अपनी कर्मशीलता से भी हाथ धो बैठा था। वह प्राय: भूखा-प्यासा पड़ा रहता। उसका नाच भी बंद हो गया था क्योंकि न तो उसके पास पंख थे और न नाचने की शक्ति ही शेष बची थी। अपनी इस स्थिति के कारण वह बहुत दुखी रहने लगा। अपमान, अभाव व अशक्तता के कारण जल्दी ही मौत के मुख में समा गया। ऐसा क्यों हुआ? उसके साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने कर्म करना छोड़ दिया। मोर की सुंदरता उसके पंखों व उसके नृत्य में है, आरामपरस्ती में नहीं। मोर हो या मनुष्य, हर प्राणी के लिए कर्म करना अनिवार्य है। जब भी हम अपना स्वाभाविक कर्म व कर्तव्य का पालन छोड़ देते हैं, हमारी दुर्गति ही होती है। हम इतने बड़े व्यापारी न बनें कि अपना सौंदर्य, अपनी कला, अपनी योग्यता अथवा अपनी नैतिकता ही किसी लालच के वशीभूत होकर खो बैठें। कर्म व कलाओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन द्वारा हम आसानी से अपनी आजीविका भी कमा सकते हैं और स्वस्थ तथा रोगमुक्त भी बने रहते हैं।

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

एक बेहद सम्पन्न व्यक्ति से किसी ब्रह्माकुमार भाई ने पूछा कि आपकी हीरे की अंगूठी की चमक आपकी विशेषता से है या हीरे की विशेषता से? जवाब मिला, हीरे की विशेषता से है। फिर पूछा गया कि आपकी सुन्दर व कीमती घड़ी, इसके बनाने वाले के कमाल से है या यह आपका कमाल है? जवाब मिला, यह तो बनाने वाले का कमाल है। अगला सवाल था, आप जो सुनहरी फ्रेम के चश्मे में इतने प्रभावशाली लग रहे हो, इसका क्या राज़ है। जवाब मिला, यह सोने का व इसको बनाने वाले सुनार का कमाल है। अंतिम सवाल था कि क्या सब बाहरी कमाल ही हैं या आप का भी कुछ कमाल है? वह सम्पन्न व्यक्ति चौंक गया और कुछ पल सोचता रह गया। उसके अन्तर्मन में मानो बिजली कौंधी। उसने मायूस हो कर कहा, भाई, आपने मेरी आंखें खोल दीं। कमाल तो आपका है जो मुझे समझा दिया कि दुनिया मेरा नहीं बल्कि मेरे सामान का सम्मान कर रही है। अब मुझे समझ में आ रहा है कि सब कुछ होते हुए भी मुझे खुशी क्यों नहीं है। उस विवेकी भाई ने मिसाल दी कि गांधीजी की घड़ी, चश्मा, पेन, धोती आदि साधारण कीमत के थे, जो आज म्यूजियम में रखे हुए हैं और रोज हजारों व्यक्ति लाइन लगा कर इन्हें देखने जाते हैं। इन जड़ वस्तुओं के साथ गांधीजी की विशेषताएँ जुड़ी हुई हैं। विशेष कर्म करने वाली आत्माओं के गुजर जाने के बाद उनके प्रयुक्त सामान भी सम्मान पाते हैं। श्री लक्ष्मी-श्री नारायण 5000 साल पहले हुए थे। उनके प्रयुक्त सामान के उपलब्ध न होने पर भी गुणों ने उनको चिरस्मरणीय बना दिया है। तो वस्तुओं की विशेषता से जीव या जीवन यादगार नहीं बनता बल्कि आत्मा की विशेषता वाले जीवन से मनुष्य हमेशा याद किया जाता है। उस भाई ने आगे समझाया कि शरीर छूटने पर आपके अलंकार यहीं रह जायेंगे और अहंकार साथ जा कर अगले जीवन में भी आपको गुलाम बनायेगा। यह अच्छी बात है कि आप इन बातों को समझ पा रहे हो। आप दैवी कुल की आत्मा प्रतीत होते हो। आप ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाकर सात दिन का नि:शुल्क राजयोग का कोर्स जरूर करें, आपका जीवन पलट जायेगा।

कला और चरित्र – धन से नहीं आंके जाते

एक सच्चा कलाकार लोभी नहीं होता। वह अपनी कला की कीमत लगवाना पसन्द नहीं करता। इटली के प्रख्यात पेंटर, आर्किटेक्ट, मूर्तिकार व कवि माइकेल एंजोलो ने कई वर्षों की मेहनत से ईश्वरीय भावना के साथ रोम के एक गिरजाघर की साज-सज्जा की। जब उन्हें इसकी एवज में पारिश्रमिक दिया जाने लगा तो उन्होंने लेने से इसलिए मना कर दिया कि कहीं धर्मार्थ कार्य में कूची की कला धन के लोभ से विकृत न हो जाए। ताजमहल, कुतुबमीनार, दिलवाड़ा मन्दिर आदि ऐसी अनेक प्राचीन पुरातत्वीय इमारतें हैं जिनके निर्माण पर बेहद धन खर्च किया गया परन्तु न तो इनके कारीगरों का उतना नामाचार है और न ही उनको बनवाने वाले धनस्वामियों का ही उतना नाम बाला है। ये भवन कला व दस्तकारी का ऐसा गठजोड़ हैं जो धन की परिधि में न तो रखे जा सकते हैं, न आंके जा सकते हैं। उसी प्रकार श्रीकृष्ण, श्री लक्ष्मी-श्री नारायण आदि देवताओं की कितनी भी श्रेष्ठतम प्रतिमाएं बनाई जायें, उनसे उनका वास्तविक चरित्र-धन पूरा उजागर नहीं किया जा सकता। कला व चरित्र कभी धन के तराजू से आंके नहीं जा सकते।

धन मेहनती का संग पसंद करता है

जीवन के साथ धन का संयोग-वियोग लगा रहता है। जरूरत है जीवन को मूल्यों से धनी बनाना, न कि धन को जीवन बनाना। जीवन को कीमती बनाना चाहिए न कि कीमती सामान को जीवन बनाना चाहिए। धन तो केवल

एक ही व्यथा का हरण कर सकता है, वह है गरीबी। परन्तु गरीबी की भी अनेक विशेषताएँ हैं। गरीब भगवान के ज्यादा करीब होता है। गरीबी व्यक्ति को जुझारू बनाती है। वह परिश्रम से कुछ हासिल करने को प्रेरित होता है। यह तब संभव है जब वह बुराइयों से दूर रहे। गरीबी से आसमान में पहुंचे हर सफल व्यक्ति के पास बुराइयों व व्यसनों के लिए समय नहीं होता। धन से खाली जेब मनुष्य को जीवन की हजारों बातें सिखा देती है परन्तु धन से भरी जेब मनुष्य को सैकड़ों बुराइयों से जोड़ देती है। इनमें एक बुराई धन-संग्रह की भी है। मनुष्य भूल गया है कि कफन में जेब नहीं होती। अमीरी से मित्रों की बढ़ोतरी होती है जबकि गरीबी मित्रों का पलायन कराती है। गरीबी ने परिवारों को जोड़ कर ज्यादा रखा है और तोड़ा कम है। आज अमीर यह देखते हैं कि क्या खाएं (दवाई) जो भूख लगे और गरीब यह देखते हैं कि भूख लगे तो क्या खाएं। वर्तमान समय दो बातों की आवश्यकता है। अमीर यह देखें कि अभावग्रस्त होते हुए भी गरीब उनसे ज्यादा सुख- शान्ति में कैसे हैं और गरीब यह देखें कि अमीर किस प्रकार मानसिक तौर पर व्यथित हैं। अमीर यह देखें कि सीमित साधनों से कैसे जीवन जीया जाता है और गरीब यह देखें कि धनी कैसे गरीब से धनी बनते हैं। मेहनत कर के धनी होना कोई गुनाह नहीं है परन्तु बुरे कर्मों से धनी बनना, धन का दुरुपयोग करना या धनी होने का अहंकार होना गुनाह है। जो धन लम्बे समय में धीरे-धीरे आता है, वह स्थाई होता है और जो धन अचानक या थोड़े समय में प्राप्त होता है वह टिक नहीं पाता क्योंकि धन भी मेहनती का संग पसन्द करता है।

सबसे बड़ा धन है ईश्वर की प्राप्ति

जो खानदानी रईस हैं उनका स्वभाव व बोल नरम होता है, जिसे अचानक कहीं से धन मिल गया है, उसका स्वभाव व बोल सामान्य नहीं रह जाता और वह कई बार पागल हो जाता है। कहा भी गया है :-

''कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात है, यह पाये बौराय।।''

भावार्थ है कि कनक (धतूरे) से कनक (स्वर्ण-धन) में सौ गुना अधिक मादकता होती है। धतूरे को मनुष्य खाता है, तब पागल होता है परन्तु अचानक अखुट धन प्राप्त होने पर भी मनुष्य पागल हो जाता है परन्तु ज्ञान प्राप्त होने पर कोई नहीं बौराता बल्कि कोई बौराया हुआ-सा मनुष्य ज्ञान समझ ले, तो उसका बौरापन दूर हो जाए। ज्ञान-धन से तो मन का बौरापन, दृष्टि या दृष्टिकोण का भेंगापन और वृत्ति का चुलबुलापन सभी कुछ दूर हो सकते हैं। ज्ञान-धन को अमृत कहा जाता है जो मृतप्राय: व निराश-कुंठाग्रस्त व्यक्ति के जीवन में नई चेतना, उमंग, उत्साह ला सकता है। सबसे बड़ा धन तो ईश्वर की प्राप्ति है परन्तु आज तक ईश्वर के साक्षात्कार से मिली खुशी से कोई न तो बौराया है, न ही चल बसा है बल्कि ईश्वरीय साक्षात्कार की खुशी से, उसकी याद में देह छूट जाए तो इससे अच्छी बात क्या हो सकती है!

दरिद्रता धीरता से शोभित होती है

जयशंकर प्रसाद के शब्दों में दरिद्रता सब रोगों की जननी है और लोभ उसकी सबसे बड़ी सन्तान है। मुंशी प्रेमचन्द ने कहा था, दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से अधिक दुखदायी है। दरिद्र अपनी साख बनाये रखने की चेष्टा में और भी दरिद्र हो जाता है। चन्द्रगुप्त के गुरु चाणक्य के अनुसार, दरिद्रता धीरता से शोभित होती है अर्थात् कोई दरिद्र व्यक्ति यदि धीरज वाला है, तो भी शोभता है, बुरा नहीं लगता। धैर्यवान दरिद्र अर्थात् धैर्य का धनी या भावी धनवान। धीरता के साथ जब श्रम किया जाता है तो शीघ्र ही दरिद्रता दूर हो जाती है। दरिद्र व्यक्ति की बुद्धियुक्त बातें भी कोई सुनना नहीं चाहता परन्तु किसी सम्पन्न व्यक्ति की व्यर्थ बातों को भी सुना जाता है अर्थात् धन की योग्यता अपने मालिक की बोलने की अयोग्यता को ढक देती है। दरिद्र मौन व एकान्त का ज्यादा अभ्यासी होता है और संपन्न व्यक्ति बोलने और हुक्म चलाने का। मितभाषी में आत्मिक गुण निखर पाते हैं और बहुभाषी, बड़बोले व्यक्ति में अहंकार फलता-फूलता रहता है। सीमित साधन वाला व्यक्ति असीमित आत्मिक सुख का अनुभव कर सकता है परन्तु असीमित साधनों वाला व्यक्ति असीमित समस्याओं में फंस कर धन की शक्ति से सीमित समाधान लेता रहता है।

(क्रमश:)

बर्बाद कर देती है गुप्त ईर्ष्या

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

कहते हैं, एक व्यक्ति का कुबड़ निकल आया और वह झुक कर चलने लगा। इस तरह चलने से उसे काफी तकलीफ होती थी, लोगों ने समझाया कि भाई, इस कुबड़ का भी इलाज सम्भव है। कुबड़े ने कहा, ठीक है, जो इलाज करता है उससे मुझे मिला दो। वे लोग उसे एक सन्त के आश्रम में ले गए। सन्त ने उसे देखकर कहा, इलाज सम्भव है पर एक हफ़्ता लगातार मेरे पास आना होगा।

कुबड़े व्यक्ति ने कहा, सन्त महाराज, पहले आप मेरा एक कार्य करो, मेरे पड़ोसी मुझे देख बहुत हंसते हैं और जलते भी हैं। पहले आप उन्हें कुबड़ा बना दो ताकि मेरे मन को सुकून मिले और मैं उन्हें झुककर चलता हुआ देख सकूँ। यह है ईर्ष्या, इसके वश व्यक्ति स्वयं के सुख की परवाह छोड़कर दूसरों को दुखी देखना चाहता है।

ईर्ष्या मनोविकार है

ईर्ष्या एक मनोविकार है जो आलस्य, अहंकार से पैदा होता है। अहंकार से आहत व्यक्ति दूसरों की भलाई तनिक भी नहीं देख सकता। उसे अपनी कमजोरियाँ नजर नहीं आतीं और यह भाव बना रहता है कि जो कुछ हूँ, मैं ही हूँ, जो भी प्राप्ति हो, उसका केवल मैं ही हकदार हूँ।

ईर्ष्या मनुष्य का ऐसा कुत्सित भाव है जो दूसरों की उन्नति, सुख-आनन्द व गुणों के विकास को देख घुटन, तड़पन और हताशा के जाल में फंसा कुढ़ता रहता है। यह एक ऐसी आग है जो दूसरों को फलते-फूलते देख भीतर ही भीतर सुलगती रहती है। ईर्ष्या अप्रकट क्रोध है, यह दूसरों को हीन नजर से देखने की इच्छा का नाम है।

स्पर्धा मन की स्वस्थ अवस्था है। स्पर्धा में दुख का विषय होता है, मेरी तरक्की क्यों नहीं हुई? ईर्ष्या में दुख का कारण है, उसकी तरक्की कैसे हो गई? स्पर्धा विश्व में गुणवान, प्रतिष्ठावान और सुखी व्यक्तियों की गिनती में कुछ वृद्धि करना चाहती है, वहीं ईर्ष्या करती है कमी।

ईर्ष्या छिप नहीं सकती

आमतौर पर ईर्ष्यालु व्यक्ति यही समझते हैं कि कुत्सित भावना को उन्होंने अपने मन में छिपा कर रखा है जिसका किसी को पता नहीं है परन्तु यह उनकी भूल है। ईर्ष्या की भावना कभी छिप नहीं सकती, वह किसी ना किसी रूप में फूट पड़ती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति के लक्षण हैं – रोग, शोक, दुख, भय, भ्रम, घबराहट आदि।

ईर्ष्या करा देती है विकर्म

ईर्ष्या अन्दर ही अन्दर अनेक प्रकार के विकर्म कराती रहती है और मन पर हावी हुई रहती है। ईर्ष्या वश मनुष्य का खाने-पीने, आराम-व्यायाम पर पूरा ध्यान नहीं रहता। शारीरिक व्याधियाँ फूट पड़ती हैं। अनेक प्रकार के विकार भी नींद के समय चैन नहीं लेने देते। मस्तिष्क का पोषण पूर्ण रीति से नहीं हो पाता। इसलिए सदा अटेन्शन देकर ईर्ष्या से बचे रहना चाहिए।

शिवभगवानुवाच – ''विकारों को छोड़, देवताओं जैसे गुण स्वयं में धारण करने हैं। क्रोध, ईर्ष्या, बदले की भावना, दुख देना आदि की आदत को छोड़ना है। विकर्माजीत बनना है इसलिए अब कोई भी विकर्म नहीं करना है। हीरे समान श्रेष्ठ बनने के लिए ज्ञान-अमृत पीना और पिलाना है। विकारों पर सम्पूर्ण विजय पानी है। परमात्म याद से सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू करने हैं।''

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125